ISBN 978-93-341-2444-6

बाँदा जनपद में अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्त पोषित संस्थाओं में बी.एड. में अध्ययनरत विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमतों का अध्ययन



डॉ.अनीता शर्मा

नीलम गुप्ता

अभिषेक गुप्ता

बाँदा जनपद के अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थाओं में बी०एड० में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमतों का अध्ययन

डॉ. अनीता शर्मा

विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय)

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, अतर्रा (बांदा)

नीलम गुप्ता

एम.कॉम.,एम.एड.

अभिषेक गुप्ता

B.Sc., B.Ed.

बाँदा जनपद के अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थाओं में बी०एड० में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमतों का अध्ययन

अनीता शर्मा

नीलम गुप्ता

अभिषेक गुप्ता

E-book संस्करण: 2024

मूल्य: ₹ 35

ISBN: 978-93-341-2444-6

प्रकाशक:

अत्रि नगर बांदा रोड अतर्रा जिला बांदा UP

पिन कोड- 210201

मो०: 9026616127

ई-मेल: abhishekgupta13597@gmail.com

प्राक्कथन

शिक्षा का उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। समाज अपनी संस्कृति एवं मूल्यों को शिक्षण द्वारा संचित करता है। ऐसे में शिक्षक की भूमिका अति महत्वपूर्ण हो जाती है, परन्तु शिक्षक अपने दायित्व का निर्वाह सफलतापूर्वक तभी कर सकता है जब उसे सभी आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त हों। शिक्षण संस्था में आवश्यक तकनीकी सुविधाओं के उपलब्ध होने से ही शिक्षा एवं शिक्षण में गुणात्मक सुधार हो सकता है।

निःसन्देह देश के विकास में शिक्षा की अहम भूमिका है एवं उत्तम शिक्षा कार्यक्रम का निर्धारण अध्यापकों की योग्यता के द्वारा होता है। शिक्षा स्तर को सुधारने के लिए सर्वप्रथम अध्यापकों के लिए श्रेष्ठ व्यावसायिक शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रारम्भ करना होगा। यद्यपि हमारे देश में माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों को शिक्षित करने के लिए बी०एड० कार्यक्रम की व्यवस्था की गई है। प्रत्येक वर्ष बहुत सी प्रशिक्षण संस्थाएँ अत्यधिक मात्रा में अध्यापकों को प्रशिक्षित कर रही हैं, लेकिन कही ऐसा तो नही कि वे केवल अध्यापकों की संख्या को बढ़ा रहीं हैं? क्या इससे शैक्षिक कार्यक्रम का स्तर ऊँचा उठ पा रहीं हैं? क्या प्रशिक्षित अध्यापक अपने व्यवसाय में सफलता पा रहे हैं? क्या वे वास्तव में भारत के भाग्य का निर्माण कर रहे हैं? यदि ऐसा नहीं है तो क्यों? अध्यापक अपने कार्यों को उचित प्रकार से क्यों नहीं कर पाते? इसका अर्थ है कि व्यवसायिक कार्यक्रमों में कहीं ना कहीं कमी अवश्य व्याप्त है।

अतः यह आवश्यक है कि अध्यापक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमतों का अध्ययन किया जाए और उससे प्राप्त निष्कर्षों का आलोचनात्मक विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जाए और शिक्षण व्यवसाय तथा अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में गुणवत्ता सुधार हेतु कुछ समाधान प्रदान किए जाएं। अतः शोधकत्री द्वारा शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों को दृष्टिगत रखते हुए अध्यापक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन किया जा रहा है।

शिक्षण व्यवसाय के प्रति विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या के कारण शोधकत्री के मन में यह जिज्ञासा सहज रूप से उत्पन्न हुई कि वास्तव में ऐसे क्या कारण हैं, जिनके परिणामस्वरुप अधिकांशतः विद्यार्थी इस व्यवसाय में जाने के लिए इच्छुक रहते हैं। इसी जिज्ञासा को शान्त करने हेतु शोधकत्री द्वारा समस्या का चयन किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है "बांदा जनपद के अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्त पोषित संस्थाओं में बी.एड. में अध्ययनरत विद्यार्थियों का शिक्षण व्ययसाय के प्रति अभिमतों का अध्ययन" यह पुस्तक पांच अध्यायों में विभाजित है

प्रथम अध्याय- इस अध्याय में अध्ययन की आवश्यकता, महत्व, समस्या कथन, अध्ययन के उद्देश्य परिकल्पनाएँ, परिसीमाएं एवं महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय- इस अध्याय के अन्तरगत अध्ययन से संबन्धित कतिपय शोध कार्यों की समीक्षा को प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय इस अध्याय के अन्तरगत अध्ययन की योजना एवं प्रक्रिया, अध्ययन विधि जनसंख्या न्यादर्श शोध उपकरण परीक्षणों का प्रशासन एवं फलांकन तथा प्रयुक्त सांख्यकी विधियों का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय इसमें प्रदत्तो का सांख्यकीय विश्लेषण एवं विवेचन किया गया है।

पंञ्चम अध्याय इस अध्याय में निष्कर्ष एवं सुझावों का विस्तार से वर्णन किया गया है साथ ही शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी शोध कार्यों के लिए सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है प्रत्येक शोध कार्य सोद्देश्य होता है और शोध कार्य के परिणामों के उचित क्रियान्वयन पर ही यह उद्देश्य सार्थक हो सकता है, शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितांत आवश्यकता होती है। एक जागरूक नागरिक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य की पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसंधान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है।

यह पुस्तक निश्चित ही विद्यार्थियों के लिए शिक्षण व्यवसाय से सम्बन्धित विभिन्न आयामों की अधिकतम जानकारी प्राप्त करने में उपयोगी शिद्ध होगी जिससे वह शिक्षण व्यवसाय को भली-भाँति समझ सकें एवं उसमें अपनी पूर्ण सहभागिता सुनिश्चत कर सकें।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रंथ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। गलतिया मानवीय प्रवृत्ति है कोई भी मनुष्य गलतियों से नही बच सकता इसलिए प्रस्तुत पुस्तक में भी त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम अत्यंत आभारी रहेंगे और आगामी संस्करणों में उन त्रुटियों को दूर करने का प्रयास किया जाएगा।

डॉ.अनीता शर्मा

नीलम गुप्ता

अभिषेक गुप्ता

अनुक्रमणिका

अध्याय प्रथम

‘अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व’

प्रथम अध्याय

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

1.1 प्रस्तावना

"गुरु ज्ञान से निकला प्रकाश पुंज जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण और व्यक्तित्व के विकास की राह को रोशन करता है।"

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन का उपरोक्त कथन मानव जाति के विकास का मुख्य आधार है। मानव समस्त प्राणियों में बौद्धिक रूप से श्रेष्ठ है, उसमें ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान की क्षुधा तृप्त करने की असीम अभिलाषा व क्षमता रहती है। वह विभिन्न विषयों का अध्ययन, उनकी मीमांसा, अन्वेषण, विश्लेषण करने में असीम आनन्द का अनुभव प्राप्त करता है। ज्ञान द्वारा वह अपने लोक-परलोक के ऐहिक, लौकिक व धार्मिक जीवन तथा अपने व्यक्तित्व को सुधारने की आकांक्षा रखता है। आज का सामाजिक परिवेश द्रुत गति से परिवर्तित हो रहा है जिसके कारण सामाजिक समरसता के मुद्दे एवं मानव मूल्यों व कार्यकुशलता के निर्माण की समस्या जटिलता बनती जा रही है। इस बिन्दु को अपेक्षित गम्भीरता के साथ आलोचनात्मक चिन्तन के घेरे में लाना है, जिससे मानव समाज को एक नए शैक्षिक आयाम की प्राप्ति हो सके।

मानव की उत्पत्ति के समय से ही यह प्रमाण मिले हैं कि जितनी भी उन्नति या प्रगति मानव जाति ने की है, वह उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण ही सम्भव हो सकी है। मानव संसार के समस्त प्राणियों में उत्कृष्ट माना गया है। भाषा, चिन्तन, सृजनात्मकता, सहयोग, सामाजिक एवं व्यावसायिक लालसा जैसी मूल प्रवृत्तियों से अलंकृत मानव नि:सन्देह रूप से सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मनुष्य की इन्हीं सब मूल प्रवृत्तियों एवं अन्तरर्निहित क्षमताओं के विकास की प्रक्रिया को हम शिक्षा के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है। इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है। वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रारम्भिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्रायः कम होती है। धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरुप उसका व्यवहार परिवार, समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है जिसके परिणामस्वरुप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है।

शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है। शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है अपितु उनका चारित्रिक विकास भी करती है। संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं। जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में उच्च शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। उच्च शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है।

प्राचीन काल में अध्यापन कार्य को एक सेवा के रूप में देखा जाता था। गुरु को ईश्वर के तुल्य दर्जा दिया जाता था और ज्ञान-दान को बहुत ही पवित्र और सामाजिक हितार्थ कार्य के रूप में स्वीकार किया जाता था। धीरे-धीरे समय में परिवर्तन आया और शिक्षण कार्य एक व्यवसाय का रूप लेता गया। अध्यापकगण वेतन लेकर कार्य करने लगे।

आधुनिक समय में शिक्षण कार्य को एक आजीविका या व्यवसाय का स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) ने शिक्षण कार्य को आजीविका के रूप में मान लिया है और इसके लिए शिक्षा में गुणात्मक सुधार तथा उसके स्तर में उन्नयन की आवश्यकता पर अधिक जोर दिया गया है। किसी भी उद्यम में कुछ मूलभूत तथ्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जो न्यूनतम कौशलगत् दक्षता तथा कार्य आधारित प्रतिबद्धता और व्यवहारगत निष्पादन से सम्बन्धित होते हैं। इसके बिना कोई व्यक्ति किसी भी आजीविका में न तो आर्थिक दृष्टि से स्तरीय प्रमाणित हो सकता है। लेकिन इस गुणवत्ता को अर्जित करने के लिए आजीविका का निरन्तर अभ्यास बनाए रखने की आवश्यकता होती है। अभ्यास के अभाव में किसी भी कौशल में प्रवीणता या दक्षता नहीं पाई जा सकती और ना ही प्रतिबद्धता तथा व्यवहार निष्पादन के स्तर में उन्नयन ही सम्भव है।

आजीविका के लिए शिक्षकों की प्रशिक्षण तैयारी को व्यावहारिक माना जाता है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के द्वारा शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता तथा स्तर में उन्नयन को दृष्टिगत रखते हुए दक्ष और प्रतिबद्ध अध्यापकीय तैयारी को आवश्यक माना गया है।

सूचना तथा ज्ञान प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रम - विस्तार के परिणामस्वरुप सम्पूर्ण विश्व को एक ग्लोबल विलेज के रूप में देखा जा रहा है जिसके फलस्वरूप शिक्षकीय कार्य, भूमिका तथा उत्तरदायित्वों का विस्तार हो रहा है। यह क्षेत्र कक्षागत सीमाओं के आगे विस्तृत होते हुए उत्तरदायित्वों की वृद्धि के कारण अध्यापकीय कार्यों में निरन्तर जटिलताएँ भी बढ़ती जा रही हैं

प्रोफेसर आर. एस. दुबे समिति के प्रतिवेदन जिसमें प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर पर बल दिया गया है, को स्वीकृति देते हुए परिषद् ने गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में आजीविका हेतु अध्यापक की तैयारी को व्यावहारिक माना है। प्राथमिक स्तर पर सर्व शिक्षा को स्वीकृति देने के बाद सीखने वालों की संख्या में भारी वृद्धि को भी आज स्वीकृत नहीं किया जा सकता है। यह विस्तार अवश्य ही शिक्षक गुणवत्ता स्तर को प्रभावित कर सकता है। विद्यालय-समुदाय संबंध, अधिगम वातावरण, अध्यापकीय भूमिका, अधिगम प्रारूप में भी परिवर्तन की संभावना की अवहेलना नहीं की जा सकती है। सीखने के लिए समान अवसर मिलना तथा न्यूनतम अधिगम सीमा को प्राप्त करना अधिगमकर्ता का अधिकार है। इसके लिए व्यक्तिगत अधिगम को महत्व देना बहुत आवश्यक है। इसके अभाव में कार्य नहीं चल सकता है। इसके साथ ही छात्रों को सीखने सम्बन्धी समस्याओं को दूर करना भी अध्यापकीय दायित्वों के क्षेत्र में आने के कारण जटिलता में और वृद्धि सम्भव है। इसके लिए उपचारात्मक शिक्षण लेने की आवश्यकता होगी। कक्षा में जैसे-जैसे अधिगमकर्ता की संख्या और विविधता में अन्तर बढ़ेगा, वैसे-वैसे शिक्षण कार्य और अधिक कठिन होता जाएगा। इसके लिए अध्यापकीय कुशलता तथा दक्षता में वृद्धि और अधिक आवश्यक होती जाएगी।

अध्यापन का कार्य उसी व्यक्ति को करना चाहिए जो उसमें रुचि रखता हो अन्य किसी व्यवसाय को अर्जित न कर पाने की स्थिति में, मजबूरी में अपनाया गया शिक्षण कार्य के लिए वह सम्मान नहीं रख पाता है और हीन भावना का शिकार हो जाता है। यदि एक अध्यापक या अध्यापिका अपनी आजीविका के प्रति गर्व को अनुभव करने वाला हो तथा आजीविकागत विकास के लिए आग्रही हो तो अवश्य ही इस दिशा में अपनी प्रतिबद्धता का परिचय दे सकता है। प्रायः बेरोजगारी के कारण अध्यापन को आजीविका के रूप में ग्रहण करने की बाध्यता की स्थिति में ऐसा होना सम्भव नहीं हो पाता है। यदि वह अपने आपको वास्तविक राष्ट्र निर्माता के रूप में स्वीकार नहीं कर पाता है, तो प्रतिबद्धता की कमी सम्भव है। भावी पीढ़ी को तैयार

करने में न तो राष्ट्र नेता और न ही प्रशासनिक अधिकारीगण सक्षम हैं । चाहे वह कितना ही बड़ा अधिकारी क्यों ना हो अपने पुत्र व पुत्री की शिक्षा हेतु उसे विद्यालय में एक अध्यापक अथवा अध्यापिका के पास ही जाना होता है । यदि वह चाहे तो उसका भविष्य, उसका चरित्र और उसके व्यक्तित्व को बना सकता है। यह अधिकार जिस व्यक्ति को प्राप्त हो वह वास्तव में राष्ट्र-निर्माता अवश्य ही है, भले ही समाज व राष्ट्र उसे उपयुक्त मर्यादा प्रदान करने में अक्षम क्यों न साबित हो । इसलिए अध्यापक की आजीविका के प्रति प्रतिबद्धता आवश्यक मानी गई है ।

एक प्रतिबद्ध अध्यापक एवं अध्यापिका अवश्य ही अपनी आजीविकागत नैतिकता एवं कर्तव्य का अनुपालन करता है, चाहे उसे सामाजिक प्रतिदान मिले अथवा न मिले जो संस्कारवान मानव बनने की शिक्षा देने में समर्थ हो, उसे समाज अथवा राष्ट्र कितना प्रतिदान दे सकता है ?

कहा जाता है कि विद्या का कोई मूल्य निर्धारण नहीं किया जा सकता । उसी प्रकार अध्यापक के ज्ञानदायिनी आजीविका का प्रतिदान देना किसी करोड़पति के लिए भी सम्भव नहीं है फिर इस पवित्र आजीविका से हीन भावना का क्या स्थान हो सकता है, यह तो मात्र समझने की बात है । एक अध्यापक अथवा अध्यापिका अपने आदर्श, चरित्र एवं सद्व्यवहार के माध्यम से अपने छात्रों के जीवन को दिशा-निर्देशित करने में जितना सक्षम हो सकता है उतना अन्य कोई भी आजीविका वाला व्यक्ति नहीं हो सकता है । इस दक्षता के लिए अध्यापक का मधुर व्यवहार, मूल्यपरक आचरण तथा आजीविकापूर्ण मर्यादाओं का पालन करना ही आवश्यक है

अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को सेवापूर्व और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से यदि इस आग्रह को जागृत करने और उसकी निरन्तरता को बनाए रखने के लिए प्रयत्न कर पाना सम्भव हो पाता है तो कोई कारण नहीं हो सकता है कि शिक्षण

अभ्यास के द्वारा एक अध्यापक तथा अध्यापिका सफलता की प्राप्ति को सुनिश्चित कर सकें। जिस तरह एक चिकित्सक अपने चिकित्सा आजीविकागत् अभ्यास के माध्यम से क्रमशः उत्कृष्टता स्तर को प्राप्त करने के लिए प्रयास कर पाता है। उत्कृष्टता के प्रति हार्दिक प्रतिबद्धता के रूप में इस क्षेत्र को उचित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है। आजीविकागत् क्रियाकलापों में उत्कृष्टता की इच्छा ही एक प्रतिबद्ध अध्यापक को समाज में स्थापित करने में सक्षम हो सकती है।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा का उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। समाज अपनी संस्कृति एवं मूल्यों को शिक्षण द्वारा संचित करता है। ऐसे में शिक्षक की भूमिका अति महत्वपूर्ण हो जाती है, परन्तु शिक्षक अपने दायित्व का निर्वाह सफलतापूर्वक तभी कर सकता है जब उसे सभी आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त हों। शिक्षण संस्था में आवश्यक तकनीकी सुविधाओं के उपलब्ध होने से ही शिक्षा एवं शिक्षण में गुणात्मक सुधार हो सकता है।

भारतवर्ष में अध्यापक शिक्षा की अवधारणा एवं महत्व तथा आवश्यकता को विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) व शिक्षा आयोग (1964-66) द्वारा स्वीकार किया गया। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948) के अग्रांकित शब्दों में इन्हीं विचारों से अभिव्यक्ति पाई गई है -

"वास्तविक शिक्षा केवल कुछ पाठों को पढ़ाना और रटाना ही नहीं है, बल्कि जीवन यापन और स्वदेशी सोद्देश्यपूर्ण क्रियाएँ करना है।"

कोठारी कमीशन (1964) के अनुसार- *"भारत के भाग्य का निर्माण देश के कक्षा-कक्ष में किया जाता है।"*

निःसन्देह देश के विकास में शिक्षा की अहम भूमिका है एवं उत्तम शिक्षा कार्यक्रम का निर्धारण अध्यापकों की योग्यता के द्वारा होता है। शिक्षा स्तर को सुधारने के लिए सर्वप्रथम अध्यापकों के लिए श्रेष्ठ व्यावसायिक शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रारम्भ करना होगा। यद्यपि हमारे देश में माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों को शिक्षित करने के लिए बी0एड0 कार्यक्रम की व्यवस्था की गई है। प्रत्येक वर्ष बहुत सी प्रशिक्षण संस्थाएँ अत्यधिक मात्रा में अध्यापकों को प्रशिक्षित कर रही हैं, परन्तु क्या वे मात्र अध्यापकों की संख्या को बढ़ा रहीं हैं? क्या वे इससे शैक्षिक कार्यक्रम का स्तर ऊँचा उठा पा रहीं हैं? क्या प्रशिक्षित अध्यापक अपने व्यवसाय में सफलता पा रहे हैं? क्या वे वास्तव में भारत में भाग्य का निर्माण कर रहे हैं? यदि ऐसा नहीं है तो क्यों? अध्यापक अपने कार्यों को उचित प्रकार से क्यों नहीं कर पाते? इसका अर्थ है कि व्यवसायिक कार्यक्रमों में कहीं ना कहीं कमी अवश्य व्याप्त है।

अतः यह आवश्यक है कि अध्यापक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमतों का अध्ययन किया जाए और उससे प्राप्त निष्कर्षों का आलोचनात्मक विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जाए और शिक्षण व्यवसाय तथा अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में गुणवत्ता सुधार हेतु कुछ समाधान प्रदान किए जाएं। अतः शोधकर्त्री द्वारा शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों को दृष्टिगत रखते हुए अध्यापक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन किया जा रहा है।

शिक्षण व्यवसाय के प्रति विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या के कारण शोधकर्त्री के मन में यह जिज्ञासा सहज रूप से उत्पन्न हुई कि वास्तव में ऐसे क्या कारण हैं, जिनके परिणामस्वरुप अधिकांशतः विद्यार्थी इस व्यवसाय में जाने के लिए इच्छुक रहते हैं। इसी जिज्ञासा को शान्त करने हेतु शोधकर्त्री द्वारा समस्या का चयन किया गया है।

1.3 समस्या कथन

प्रस्तुत समस्या का कथन निम्न है-

“बाँदा जनपद के अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थाओं में बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमतों का अध्ययन।”

1.4 समस्या में प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण

I. बाँदा जनपद

जनपद बाँदा भारत के उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित केन नदी के तट पर बसा एक प्रमुख ऐतिहासिक शहर एवं लोकसभा क्षेत्र तथा चित्रकूटधाम मंडल का मुख्यालय है। बाँदा जिला 25.483571 अक्षांश एवं 80.333011 देशान्तर पर स्थित है। बाँदा महर्षि वामदेव की तपोभूमि है। बाँदा के चारों तरफ अनेक पर्यटन स्थल हैं। बाँदा रेल लाइन और सड़क जंक्शन पर स्थित एक कृषि बाज़ार है। बाँदा की जनसंख्या - 2,75,755 है और साक्षरता दर 66.67% है।

बाँदा जनपद को पाँच तहसीलों में विभाजित किया गया है -

1. अतर्रा
2. बाँदा
3. बबेरू
4. नरैनी
5. पैलानी

शोधकर्त्री द्वारा बाँदा जनपद की दो तहसीलों बाँदा और अतर्रा से न्यादर्श का चयन किया गया है

II. अनुदान प्राप्त संस्था

अनुदान प्राप्त संस्था से तात्पर्य ऐसी संस्थाओं से है जिनके प्रबन्ध एवं संगठन का कार्य प्रबन्ध कार्यकारिणी के द्वारा सम्पन्न किया जाता है, जो राज्य सरकार की शिक्षा परिषद् द्वारा अनुमोदित होती है। ऐसी संस्थाओं को राज्य सरकार द्वारा वित्तीय अनुदान प्राप्त होता है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने बाँदा जनपद की दो अनुदान प्राप्त संस्थाओं का चयन किया है।

III. स्ववित्तपोषित संस्था

स्ववित्तपोषित संस्था से तात्पर्य ऐसी संस्थाओं से है, जिनके प्रबन्ध एवं संगठन का कार्य प्रबन्ध कार्यकारिणी के द्वारा सम्पन्न किया जाता है। यह राज्य सरकार की शिक्षा परिषद् द्वारा अनुमोदित होती हैं। किन्तु ऐसी संस्था को राज्य सरकार द्वारा किसी भी प्रकार की सहायता प्राप्त नहीं होती है। यह संस्थाएँ स्वयं वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने बाँदा जनपद की दो स्ववित्तपोषित संस्थाओं का चयन किया है।

IV. बी0एड0

शिक्षा-स्नातक [Bachelor of Education (B.Ed.)] एक पूर्वस्नातक व्यावसायिक उपाधि (डिग्री) है। इसमें विद्यार्थियों को विद्यालयों में अध्यापक के रूप में शिक्षण कार्य करने हेतु तैयार किया जाता है। यह निष्णात उपाधि (मास्टर्स डिग्री) के समतुल्य मानी जाती है।

डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन (1956) के अनुसार -

1. सभी प्रकार की औपचारिक, अनौपचारिक क्रियाएँ एवं अनुभव जो कि एक व्यक्ति को किसी शैक्षिक व्यवसाय के सदस्य के उत्तरदायित्वों को ग्रहण करने तथा अपने उत्तरदायित्वों को अधिक प्रभावी रूप में पूर्ण करने के लिए गुणात्मक बनाने में सहायक है।

2. एक संस्था के द्वारा क्रियाएँ एवं अनुभवों का कार्यक्रम जो कि ऐसे व्यक्तियों की तैयारी एवं अभिवृद्धि के लिए उत्तरदायी है, जो स्वयं को शैक्षिक कार्य तथा शैक्षिक व्यवसाय के कार्य हेतु तैयार कर रहे हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में बी0एड0 (शिक्षा स्नातक) पद का आशय माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए किया गया है। इसके अन्तर्गत बी0एड0 तथा अन्य समकक्ष उपाधि सम्मिलित हैं।

V. **विद्यार्थियों**

विद्यार्थियों से आशय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अध्ययनरत् पुरुष छात्र एवं महिला छात्राओं से है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् पुरुष छात्र- छात्राध्यापक एवं महिला छात्राएँ- छात्राध्यापिकाएँ कहलाती हैं। अत: अध्ययन हेतु शिक्षण संस्थान में बी0एड0 में अध्ययनरत् छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं का चयन किया गया है।

VI. **शिक्षण व्यवसाय**

एनसाइक्लोपीडिया डिक्शनरी एण्ड डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन (1971) के अनुसार शिक्षण एवं व्यवसाय को निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है-

शिक्षण

शिक्षण संस्थाओं में छात्रों को प्रदान किया जाने वाला अनुदेशन, अधिगम परिस्थितियाँ, निर्देशन क्रियाएँ एवं सामग्री तथा अन्य सुविधाएँ जो औपचारिक तथा अनौपचारिक अधिगम के लिए आवश्यक होती है।

व्यवसाय

किसी व्यवसाय के लिए उच्च शिक्षा स्तर पर दीर्घ तथा विशिष्ट तैयारी की आवश्यकता होती है तथा प्रत्येक व्यवसाय अपनी स्वयं की विशेष आचार संहिता का पालन करता है। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवसाय से तात्पर्य बी0एड0 की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् कक्षा- 6 से 12 हेतु अध्यापन कार्य को व्यवसाय के रूप में अपनाने से है।

VII. अभिमत

बेक्सटर्स डिक्शनरी (1768) के अनुसार - *"किसी विशिष्ट वस्तु के प्रति मस्तिष्क में निर्मित विचार या निर्णय ही मत कहलाता है।"*

प्रस्तुत अध्ययन में अभिमत से तात्पर्य बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की व्यक्तिगत राय या मत से है।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

जीवन के सभी कार्य सोद्देश्य होते हैं क्योंकि उद्देश्य के अभाव में जीवन दिशाहीन हो जाता है। किसी भी कार्य की सफलता उसके निर्धारित किए गए उद्देश्यों पर निर्भर करती है। उद्देश्यों की स्पष्टता अध्ययन को सरल व सफल बना देती है, इसीलिए प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने कुछ उद्देश्य निर्धारित किए हैं ताकि शोधकर्त्री को सही दिशा मिल सके। शोधकर्त्री ने शोध अध्ययन के उद्देश्यों को निम्न खण्डों में विभक्त किया है -

प्रथम खण्ड-

1. शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी0एड0 संस्था में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन।
2. शिक्षण व्यवसाय के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन।
3. शिक्षण व्यवसाय के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन।
4. शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन।
5. शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन।

द्वितीय खण्ड-

6. शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों का तुलनात्मक अध्ययन।
7. शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों का तुलनात्मक अध्ययन।

1.6 अध्ययन की परिकल्पनाएँ -

उपयुक्त शोध परिकल्पना की रचना करना किसी भी शोध अध्ययन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है- 'पूर्व चिन्तन'। यह अनुसन्धान की प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है इसका तात्पर्य है कि किसी समस्या के विश्लेषण और परिभाषीकरण के पश्चात् उसमें कारणों तथा कार्यकारण के सम्बन्ध में पूर्व चिन्तन कर लिया गया है अर्थात् इस समस्या का यह कारण हो सकता है। यह निश्चय करने के बाद उसका परीक्षण प्रारम्भ हो जाता है। ऐसा करने से शोधकर्त्री को शोध समस्या से सम्बन्धित आँकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण करने में सही दिशा मिलती है।

जॉन डब्लू0 बेस्ट के अनुसार "परिकल्पना एक विचार युक्त कथन है जिसका प्रतिपादन किया जाता है और अस्थाई रूप से सही मान लिया जाता है और निरीक्षण व प्रदत्तों के आधार पर, तथ्यों पर तथा परिस्थितियों के आधार पर व्याख्या की जाती है जो आगे शोध कार्यों को निर्देशन देता है।"

शोधकर्त्री द्वारा अपने शोध के अध्ययन से सम्बन्धित तैयार की गई परिकल्पनाएँ निम्नलिखित प्रकार से हैं -

1. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
6. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
7. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
8. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

9. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
10. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
11. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
12. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
13. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
14. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

1.7 अध्ययन की परिसीमाएँ

प्रस्तुत शोध के क्षेत्र में शोधकर्त्री की कुछ सीमाएँ हैं जिसके कारण वह अपने इस शोध कार्य को अधिक विस्तृत नहीं कर सकती। शोधकर्त्री के समक्ष समय की एक निश्चित सीमा है,

जिसमें उसे यह शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना है। उसके साथ ही शोधकर्त्री को अपने संसाधनों को भी ध्यान में रखना है जहाँ न्यादर्श की उपलब्धता की भी एक सीमा है। समय, श्रम, धन के महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध निम्नलिखित सीमाओं के अन्तर्गत पूर्ण किया जाता है-

1. प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध में उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद के बाँदा और अतर्रा तहसील के बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का अध्ययन किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में दो अनुदानित एवं दो स्ववित्तपोषित संस्थाओं के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।
3. न्यादर्श में बी0एड0 में अध्ययनरत् केवल 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राओं) को ही सम्मिलित किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को केवल बाँदा जनपद के बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर ही लागू किया जा सकता है।

1.8 अध्ययन का महत्व

आधुनिक समय में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ प्रदर्शक होता है जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता है। भारतीय संस्कृति में शिक्षक को दो स्वरूपों में देखा जाता है, जिन्हें आध्यात्मिक गुरु और लौकिक गुरु के रूप में परिभाषित किया गया है। कहते हैं यदि जीवन में शिक्षक नहीं हो तो शिक्षण सम्भव नहीं है। अतः शिक्षक ही उच्च कोटि के विद्वान, श्रेष्ठ नागरिक, कुशल प्रशासक, वैज्ञानिक, श्रेष्ठ कलाकार आदि का मार्गदर्शन कर उसे कुशल बनाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ दशक उपरान्त तक भारत सरकार ने उच्च शिक्षा के प्रति अनुकूल प्रवृत्ति अपनायी तथा इसके विकास के लिए अनुदान एवं स्ववित्तपोषित संस्था का प्रावधान किया। सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप ही उच्च शिक्षा की वर्तमान प्रगति दिखाई दे रही है। यद्यपि सरकार द्वारा प्रदान किए जाने वाले अनुदान में समय-

समय पर बदलाव होता रहा है। जिसके फलस्वरूप उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा समय-समय पर अनुदान को बढ़ाने की माँग की जाती रही है। देश में उदारीकरण के आरम्भ से ही सरकार ने इस क्षेत्र में अपनी भागीदारी कम करने तथा निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने के लिए आधार प्रदान किया। इसके साथ ही भारत जब आजाद हुआ तब संविधान बनाते समय भारत सरकार द्वारा कहा गया कि सन् 1960 तक 'नि:शुल्क प्राथमिक शिक्षा' सभी 6 से 14 वर्ष के बच्चों को प्रदान की जाएगी। परन्तु आज तक यह कार्य पूर्ण नहीं हो सका। सभी को साक्षर बनाने के अपने संकल्प को पूरा न कर पाने की स्थिति में सरकार को इस क्षेत्र में और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता ने उच्च शिक्षा में दी जाने वाली सहायता को कम करने के लिए विवश किया है। साथ ही साथ उच्च शिक्षा में बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए पर्याप्त साधन नहीं है। अतः इन स्थितियों को देखते हुए सरकार ने इसे स्ववित्तपोषित की ओर निजी क्षेत्र के योगदान की अनिवार्यता को स्वीकार कर लिया और केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की इस सन्दर्भ में बनायी गई समिति (2004-2005) ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निजी प्रयास की भूमिका को स्वीकार कर लिया।

सरकार द्वारा शिक्षक शिक्षण की पद्धति को सुधारने का प्रयास किया गया एवं समय-समय पर सरकार द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षण हेतु बदलाव किए गए। सन् 2015 में बी0एड0 पाठ्यक्रम को दो वर्षीय पाठ्यक्रम के रूप में स्वीकार किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य उच्च प्रशिक्षण द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर उच्च शिक्षकों का निर्माण करना एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुचारू रूप से लागू करना है। इस लघुशोध अध्ययन के माध्यम से शोधार्थी अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमत जानने की इच्छुक है।

अध्याय द्वितीय

‘सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण’

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की भूमिका

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोध का अभिन्न अंग होता है | यह किसी शोधकर्ता के लिए समस्याविशेष के मूल में पहुँचने का महत्वपूर्ण साधन है तथा अनुसन्धान का प्राथमिक आधार है | शोध प्रबन्धन की वास्तविक योजना एवं उसके संचालन से पूर्व शोधकर्ता अपनी समस्या से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन इसलिए करता है क्योंकि यह उसे अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है | विषय सम्बन्धी अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है तथा नई समस्याओं की जानकारी देता है | यह परिणामों के सत्यापन के लिए भी आवश्यक है | इसके अभाव में कोई भी अनुसन्धान उच्च स्तर का नहीं हो सकता है |

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसन्धान से सम्बन्धित सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है | सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसन्धानकर्ता का कार्य अन्धे के तीर के समान होगा | इसके अभाव में सही दिशा में वह एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता है, जब तक उसे पता ना हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है | बिना इसके ज्ञान के वह न तो किसी समस्या का निर्धारण कर सकता है, न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है | शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य किसी समस्या विशेष पर नवीन दृष्टिकोण से विचार करना या उसमें नवीनता लाना अथवा समस्या की नवीन ढंग से व्याख्या करना है, परन्तु नवीनता पूर्व में हुए कार्यों को जाने बिना सम्भव नहीं |

2.2 सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन का अर्थ एवं महत्व

साहित्य के पुनरावलोकन में दो शब्द हैं – 'साहित्य' तथा 'उसका पुनः अवलोकन करना |'

साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसन्धान के विषय के ज्ञान की ओर संकेत करता है जिसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक शोध अध्ययन आ जाते हैं | पुनरावलोकन शब्द का अर्थ शोध के विषय क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एवं ज्ञान को विस्तृत करके यह दिखाना है कि उसके द्वारा किए गए धन के क्षेत्र में योगदान होगा | सभी प्रकार की पुस्तकों , ज्ञानकोषों, पत्रिकाओं में प्रकाशित अध्ययन से अनुसन्धान कर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है |

गुड, बार एवं स्केट्स (1973) का मानना है कि "एक कुशल चिकित्सक के लिए आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे , उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसन्धानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है |"

अतः शोधकर्ता के लिए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना इसलिए भी आवश्यक है ताकि उसे यह जानकारी प्राप्त हो सके कि उक्त समस्या पर पहले कितना कार्य हो चुका है तथा उसके आधार पर उसे अपने शोध अध्ययन में और किन-किन आयामों को सम्मिलित करने की आवश्यकता है जिससे नवीन परिणाम निकल कर आए जो कि शिक्षकों की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक हो सके |

2.3 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता

शोधकर्त्री के लिए शोध समस्या से सम्बन्धित उपयुक्त निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है जिसकी आवश्यकता को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है -

- सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करता है तथा विभिन्न सिद्धान्तों एवं निहित धारणाओं को समझने में सहायता करता है |
- अनुसन्धान के लिए किए गए क्षेत्र में कितना और किस प्रकार का कार्य हो चुका है इसकी जानकारी सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से प्राप्त होती है तथा अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है |
- सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण समस्या के परिभाषीकरण , अवधारणा तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है |
- सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अनुसन्धानकर्ता के ज्ञानकोष में वृद्धि करता है तथा वर्तमान अध्ययन के लिए शोध विधियों का सुझाव देता है | पूर्व साहित्य का अध्ययन शोधकर्ता को उपयुक्त प्रतिचयन विधि एवं प्रदत्त संग्रह करने के प्रासंगिक उपकरणों के चयन प्रदत्तों के संगठन एवं विश्लेषण हेतु विवेकपूर्ण सांख्यिकीय तकनीकी के चयन में अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है |
- सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण शोधकर्ता को अपने शोध परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने में पूर्व शोध के तुलनीय आँकड़े प्रदान करता है | जो परिणामों के अर्थ , निर्णय एवं व्याख्या में सहायक होते हैं |
- सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण शोधकर्ता को अलाभप्रद एवं अनुपयोगी समस्याओं से बचाता है, जिससे मौलिक एवं उपयोगी अनुसन्धान सम्भव होता है|
- सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण शोधकर्ता को महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करता है कि पूर्व अनुसंधायक ने अपने अध्ययन में एवं अनुसन्धान हेतु क्या अनुशंसाएं की थी |

2.4 सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के कार्य

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य हैं –

- ❖ सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के द्वारा शोधकर्त्री को अपने शोध कार्य की स्पष्ट पृष्ठभूमि प्राप्त होती है तथा उसमें निहित विभिन्न सिद्धान्तों एवं धारणाओं को समझने में सहायता मिलती है |
- ❖ प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थाओं में बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमतों का अध्ययन कर रही है |
- ❖ अतः उसे यह जानना नितान्त आवश्यक है कि इस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है तथा उस कार्य की प्रकृति क्या है जो कि सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के अध्ययन द्वारा ही सम्भव है |
- ❖ शोधकर्त्री द्वारा किए गए शोध कार्य में किस विधि का प्रयोग उपयुक्त होगा , किस उपकरण का उपयोग करें , किस प्रकार की सांख्यिकीय का प्रयोग कर उचित परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं आदि की जानकारी भी सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त होती है |
- ❖ इसके द्वारा समस्या का परिभाषीकरण , अवधारणा, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता मिलती है |
- ❖ सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण की सहायता से प्राप्त निष्कर्षों के विश्लेषण की सूझ विकसित होती है |

2.5 शोध से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

गुड और अन्य मानते हैं कि सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण वह सहायता करता है कि अब तक जो साहित्य उपलब्ध है क्या वह समस्या का समाधान करता है ? क्या वह शोध पुनरावृत्ति तो नहीं? इसके खोजकर्ता को विद्वता , विचार, सिद्धान्त व्याख्या की उपलब्धि होती है , जिससे वह समस्या समझ सके और सही विधियाँ अपना सके |

शिक्षा के क्षेत्र में भी अन्य क्षेत्रों की तरह एक शोध कर्ता को अब तक की खोजों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए | पुस्तकों, पत्रिकाओं, इंटरनेट के माध्यम से ही अब तक के उपलब्ध साहित्य से साक्षात्कार किया जा सकता है | यह अध्ययन चूँकि शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी 0एड0 करने वाले विद्यार्थियों के अभिमतों के अध्ययन से सम्बन्धित है | अतः शिक्षण व्यवसाय तथा छात्राध्यापकों से सम्बन्धित अध्ययन साहित्य को लिया गया है व इनकी सहायता शोध अध्ययन के विकासार्थ ली गई |

- **नीलसन, सी0 एल0 (1971)** ने मेरीलैंड विश्वविद्यालय से छात्रों की व्यावसायिक सफलता पर अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति का प्रभाव जानने का प्रयास किया तथा निष्कर्ष रूप से अपने अध्ययन में बताया कि धनात्मक शिक्षण अभिवृत्ति रखने वाला अध्यापकों का समूह बी0एड0 कार्यक्रम को पसन्द करता है |
- **ब्यूटल, एस0 एल0 (1971)** ने अपने अध्ययन में बताया कि निम्न शिक्षण अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों ने उच्च शिक्षण अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों की तुलना में प्रशासनिक , वित्तीय एवं व्यावसायिक आकद क्षेत्रों से सम्बन्धित अनेक समस्याओं को व्यक्त किया है |
- **विष्ठ, जी0 एस0 (1972)** ने 'ए स्टडी ऑफ द लेबिल ऑफ एजूकेशनल एक्सपीरियंस इन रिलेशन टू सोशियो इकोनामिक कंडीशन एण्ड एजुकेशनल अटेनमेंट' पर अध्ययन किया | इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य थे –
  - शिक्षकों की शैक्षिक आकांक्षाओं के स्तर का अध्ययन करना |
  - शैक्षिक आकांक्षाओं का सामाजिक-आर्थिक दशाओं एवं शैक्षिक योग्यताओं के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना |

प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श हेतु प्राथमिक स्तर के 490 शिक्षकों का चयन किया गया | उपकरण के रूप में कुप्पुस्वामी द्वारा निर्मित सामाजिक आर्थिक स्तर सूची का प्रयोग किया गया तथा अनुसंधानकर्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षाओं की प्रश्नावली का प्रयोग किया गया|

अध्ययन के फलस्वरुप निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए-

- शिक्षकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनकी आकांक्षाओं पर प्रभाव पड़ता हुआ प्राप्त हुआ |
- पारिवारिक आय से भी शैक्षिक आकांक्षाओं का स्तर प्रभावित होता पाया गया |

➢ **सोवलमैन, ए0 (1972) ने** न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय से अपने अध्ययन में अध्यापकों की कक्षागत भूमिकायें , उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों तथा उनकी शिक्षा व्यवसाय के प्रति अभिवृत्तियों आदि कारकों की खोज की |

➢ **शर्मा, एस0 एन0 (1973)** ने 'इवेल्यूएशन ऑफ प्रेक्टिस टीचिंग प्रोग्राम ऑफ पी.जी. टीचर एजूकेशन' नामक विषय पर शोध किया | जिसमें प्रतिदर्श के रुप में उत्तर प्रदेश के 35 चुने हुए महाविद्यालयों के शिक्षा विभाग के लगभग 1080 चुने हुए छात्राध्यापकों को लिया | 35 प्रतिशत अध्यापक जो उत्तर प्रदेश में माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत थे , को भी प्रतिदर्श में सम्मिलित किया गया |

प्रश्नावली प्रपत्र और स्थिति प्रदत्त संकलन के उपकरण थे | अध्ययन के फलस्वरुप निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- विभिन्न विधियों, शिक्षण तकनीकी और पाठ योजना निर्माण का ज्ञान विद्यार्थियों को स्थायी रूप से दिया गया |

- शिक्षण सामग्री के निर्माण और श्यामपट्ट लेख का प्रशिक्षण साधारण रूप से विद्यार्थियों को दिया गया |
- कॉलेज का छात्राध्यापकों पर कोई नियन्त्रण नहीं था और उनसे बहुत कम सहयोग लेते हैं |

अन्त में उनका सुझाव था कि आलोचना पाठ सभी संस्थाओं में कराए जाते हैं | उनके मूल्यांकन को वार्षिक मूल्यांकन से भी जोड़ा जाना चाहिए |

- **मैडले एवं डोलान्ड , एम 0 (1977)** ने 'टीचर इफैक्टिवनैस ' सम्बन्धित अनुसंधान में छात्राध्यापकों से सम्बन्धित प्रमुख तीन कारकों को मुख्य प्रभाव कक्षा-कक्ष निष्पत्ति का आधार पाया-
    - शिक्षक की स्वयं की योग्यता अधिगम पर्यावरण को सचेत करती है और अधिगम पर्यावरण बनाए रखने का कारण होती है |
    - विद्यार्थियों के समय का प्रभावी उपयोग |
    - शिक्षक की वह शिक्षण संव्यूहन (योजना) जिसमें शिक्षक छात्र परस्पर प्रक्रिया होती है |
- **दास, के0 (1985)** 'उड़ीसा में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का अभिप्रेरणात्मक गुणवत्ता के सन्दर्भ में विकास का अनुसन्धान ' का अध्ययन किया | **निष्कर्ष** में पाया गया कि प्राइवेट बी0एड0 महाविद्यालयों में व्यावसायिक दृष्टिकोण के कारण आधारभूत व्यवस्था में कमी , शिक्षकों की कमी, प्रशिक्षण व्यवस्था के अभाव के कारण राज्य में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की बुरी स्थिति है | शिक्षकों की चयन प्रक्रिया एवं शिक्षण के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण शिक्षक कार्यक्रम की दशा को इंगित करता है | राज्यों के तीनों विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में विविधता है |

- **भाटिया, आर0 (1987)** मुंबई विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षा महाविद्यालय में 'बी0एड0 पाठ्यक्रम का मूल्यांकन' का अध्ययन किया | **निष्कर्ष** में पाया कि नए पाठ्यक्रम में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव के साथ कुछ विषय वस्तुओं की पुनरावृत्ति की गई है | नए पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन मे कठिनाई हुई | नए पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक क पक्ष को अधिक महत्वपूर्ण बना दिया गया है |
- **कुमार, पी0 (1990) ने** 'वर्तमान शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम का व्यावहारिक एवं सर्वेक्षणात्मक अध्ययन ' नामक विषय पर शोध किया | इस अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों द्वारा आयोजित अभ्यास-शिक्षण की व्यावहारिकता से सम्बन्धित शिक्षक प्रशिक्षकों के अभिमत एवं उनकी सहमति तथा असहमति तथा असहमति की अभिवृत्तियों के मध्य सार्थकता का अध्ययन करना था |

अध्ययन के लिए 50 शिक्षक-प्रशिक्षक अध्यापकों को यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित किया गया | अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत् हैं -

- वर्तमान शिक्षक-प्रशिक्षक का छात्राध्यापकों एवं शिक्षक-प्रशिक्षकों के अभिमत पर कोई प्रभाव न होने के कारण अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम व्यवहारिक नहीं है |
- वर्तमान शिक्षक-प्रशिक्षक महाविद्यालयों द्वारा आयोजित अभ्यास कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षक-प्रशिक्षक वर्ग द्वारा शिक्षण सुधार हेतु दी जाने वाली सुझावात्मक टिप्पणियों से छात्राध्यापकों में शैक्षणिक क्षमताओं का विकास ना होने से वर्तमान अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम व्यवहारिक नहीं है |

- **नंदिनी मनसुख भाई, छगनलाल)1992)** ने- 'अध्यापकों के बच्चों एवं गैर अध्यापकों के बच्चों में अनेक मूल्य, समायोजन, अध्यापक व्यवसाय के प्रति सकारात्मकता' विषय पर पी-

स्तरीय शोधकार्य करके अपने परिणाम में पाया कि अध्यापकों के बच्चों के .डी.एच

सामाजिक मूल्यों में सार्थकअन्तर पाए गए | प्राथमिक अध्यापकों के बच्चों में प्रभुत्व मूल्य महाविद्यालय अध्यापकों के बच्चों से उच्च पाया गया | धार्मिक मूल्य में महाविद्यालय के बच्चे, प्राथमिक के बच्चों से उच्च स्तर के पाए गए | अध्यापकों के बच्चे गैर अध्यापकों के बच्चों से अधिक समायोजित थे | इन सभी शिक्षकों की संतानों की गुणात्मक शिक्षा बेहतर मिली व बच्चों में अध्यापक व्यवसाय के दृष्टिकोण में कोई अन्तर नहीं है |

- **बवेजा, सुखान्त (2003)** 'दक्षता आधारित शिक्षक प्रशिक्षण रणनीति की प्रभावशीलता का अध्ययन' किया गया | **निष्कर्ष** में पाया कि परम्परागत प्रशिक्षण मॉडल की अपेक्षा दक्षता आधारित शिक्षक प्रशिक्षक रणनीति शिक्षकों के सामान्य शिक्षण दक्षता विकास के लिए ज्यादा प्रभावशाली है | परम्परागत प्रशिक्षण मॉडल और दक्षता आधारित शिक्षक प्रशिक्षण रणनीति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण को बदलने में सक्षम नहीं है |
- **देवी, के0 (2004)** **'**बी0एड0 प्रशिक्षुओं का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति' का अध्ययन किया | **निष्कर्ष** में पाया कि बी0एड0 प्रवेश परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिव्यक्ति पाई गई |
- **कौर, जे0 (2004)** 'शिक्षक शिक्षण कार्यक्रम पर शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिप्रेरणा एवं अभिवृत्ति के साथ विभिन्न व्यक्तित्व कारक वाले प्रशिक्षणार्थियों के प्रभाव का अध्ययन' किया | **निष्कर्ष** में पाया कि बी 0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में कार्यक्रम की समाप्ति के दौरान अभिवृत्ति में न्यूनता आती है जो कि बी 0एड0 विद्यार्थियों की अभिक्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डालती है | अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम बी0एड0 छात्रों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को विकसित करने में अक्षम है |

- **गिल, टी0 के0 एवं सैनी, एस0 के0 (2005)** 'अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा शिक्षण व्यवसाय के प्रति छात्राध्यापक की अभिवृत्ति का अध्ययन ' किया | **निष्कर्ष** में पाया कि बी0एड0 कार्यक्रम में नामांकन के दौरान विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई | कार्यक्रम के बढ़ने के साथ-साथ विद्यार्थी की शिक्षण व्यवसाय के प्रति कार्यक्रम के सकारात्मक अभिव्यक्ति में सार्थक वृद्धि पाई गई | अध्यापक शिक्षा की नीतियाँ छात्रों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास में सहायक है |
- **शर्मा, एस0 (2006)** 'बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का सामान्य शिक्षण योग्यता, व्यावसायिक शिक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन ' किया | **निष्कर्ष** में पाया कि लिंग एवं अनुशासन का बी 0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता के विकास में कोई योगदान नहीं है |
- **गुप्ता, वी 0 (2006)** ने 'ए कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड लेवल ऑफ एस्पिरेशन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल ट्रेनिंग विफोर इन टीचिंग प्रैक्टिस' नामक विषय पर अध्ययन किया | अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे -
  - माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना |
  - माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना |
  - आत्म प्रत्यय एवं आकांक्षा स्तर के सम्बन्ध का अध्ययन करना |

अध्ययन के परिणामस्वरूप निष्कर्ष निम्नवत् रहे –

1. शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रशिक्षणार्थियों के आकांक्षा स्तर आत्म प्रत्यय पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा |

2. स्नातकोत्तर एवं स्नातक स्तर के प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय एवं आकांक्षा स्तर में अन्तर पाया गया |
3. छात्र एवं छात्राओं की आत्म प्रत्यय में अन्तर पाया गया |

- **मिश्रा, लोकनाथ (2007)** 'दो वर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के छात्राध्यापकों का शिक्षण व अध्यापक शिक्षा के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन' किया | **निष्कर्ष** में पाया कि 95% छात्राध्यापकों ने माना कि शिक्षकों का प्रशिक्षण एक अनिवार्य इनपुट है | 84% छात्राध्यापकों ने विद्यालय स्तर के शिक्षण में रुचि दिखलाई | 64% छात्राध्यापकों ने महसूस किया एक वर्षीय प्रशिक्षण अपर्याप्त है | 76% छात्राध्यापकों ने दो र्षीय पाठ्यक्रम को पसन्द किया |
- **नरसिंह मूर्ति, आर0 (2007)** – 'गृह वातावरण, शिक्षण दक्षता और अभिवृत्ति के सम्बन्ध में शिक्षण वयवसाय के प्रति बी 0एड0 संस्थानों के शिक्षक प्रशिक्षकों की अभिवृत्ति |' इस अध्ययन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक तकनीकों का प्रयोग किया गया | 47 बी0एड0 महाविद्यालय चुने गए | जिसमें 17 सरकारी और 30 गैर सरकारी महाविद्यालयों को लिया गया | जिनमें 225 पुरुष और 225 महिला शिक्षक प्रशिक्षक थे | निष्कर्ष में पाया कि बी0एड0 महाविद्यालयों के महिला और पुरुष प्रशिक्षकों के मध्य कोई भावनात्मक सम्बन्ध नहीं है | बी0एड0 महाविद्यालयों के शिक्षक-प्रशिक्षक जो हिन्दू और मुस्लिम समुदायों से सम्बन्धित हैं, में सार्थक भिन्नता पाई गई |

- **रामाकृष्णा, ए0 (2008)** 'बी0एड0 महाविद्यालय के विद्यार्थियों में शिक्षण अभिरुचि का अध्ययन' किया | **निष्कर्ष** में पाया कि पुरुष विद्यार्थियों की अपेक्षा महिला विद्यार्थियों में शिक्षण अभिरुचि अधिक पाई गई |

➢ **सुनीथा, जी0 (2008)** 'छात्राध्यापक का माध्यमिक स्तर के शिक्षण प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन' किया | **निष्कर्ष** में पाया कि छात्राध्यापक जिनका स्नातक के तुरन्त बाद बिना किसी अन्तराल के बी0एड0 में नामांकन हुआ उनमें शैक्षिक अभिवृत्ति सार्थक पाई गई | छात्राध्यापक की अभिवृत्ति के स्तर को प्राप्त करने में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम विफल रहा है |

➢ **लिखिया, के0 एस0 (2009)** 'शिक्षक प्रशिक्षक कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षक सामर्थ्यता में परिवर्तन का अध्ययन ' किया | **निष्कर्ष** में पाया कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सामर्थ्यता में शिक्षक कार्यक्रम के पश्चात् सार्थक अन्तर देखा गया | लिंग भेद के सन्दर्भ में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सामर्थ्यता में सार्थक अन्तर नहीं है | विज्ञान संकाय , शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण सामर्थ्यता कला व वाणिज्य संकाय, शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक पाई गई |

➢ **महालक्ष्मी, डी0 (2009)** 'ए स्टडी ऑफ द अवेयरनेस ऑफ फ्यूचर टीचर ' का अध्ययन किया | **निष्कर्ष** में पाया कि पुरुष भावी शिक्षकों की अपेक्षा महिला भावी शिक्षक चिन्ता को ज्यादा महत्व देते हैं | शहर की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के भावी शिक्षक ज्यादा चिन्ता करते हैं |

➢ **चौहान, मीना (2009) ने** - 'विभिन्न वर्गों के शिक्षकों में सामाजिक समरसता , शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति व व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन ' कर परिणाम में पाया कि शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक समरसता में उच्च स्तरीय सह सम्बन्ध पाया गया तथा यह दृष्टिगत हुआ कि वे अध्यापक जिनकी अपने कार्य के प्रति अभिवृत्ति का स्तर उच्च है, उनमें व्यावसायिक प्रतिबद्धता अधिक मात्रा में पाई गई |

➢ **पौरुष, आर0 (2009)** ने 'शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक एवं संवेगात्मक परिपक्वता पर शिक्षक-प्रशिक्षण अभ्यास के प्रभाव का अध्ययन ' किया | इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य

था - शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक एवं संवेगात्मक परिपक्वता पर शिक्षक-प्रशिक्षण अभ्यास कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना | इस अध्ययन के निष्कर्ष निम्नवत् रहे-

1. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं सामान्य स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक एवं संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर नहीं होता |
2. गैर शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) से सामाजिक एवं संवेगात्मक परिपक्वता की दृष्टि से कोई सार्थक अन्तर नहीं होता |

- **भार्गव, के0 (2011)** 'छात्र अध्यापक की शिक्षण योग्यताओं के प्रति प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन' किया | **निष्कर्ष** में पाया कि छात्र अध्यापकों को शैक्षिक तकनीकी का सैद्धान्तिक के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना आवश्यक है | सभी तकनीकियों का प्रयोग वास्तविक कक्षा शिक्षण में करने में सक्षम हो सके |

- **अनिल, आर0 एवं जोसेफ , एस0 (2011) ने** 'कन्नूर विश्वविद्यालय में बी 0एड0 में अध्ययनरत् शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति रुचि का अध्ययन' किया | इस अध्ययन में केरल के कन्नूर विश्वविद्यालय के तीन अलग-अलग कॉलेजों में बी 0एड0 में अध्ययनरत् 287 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया | प्रतिदर्श में 94 पुरुष 193 महिला प्रशिक्षणार्थी थी | प्रशिक्षण अवधि की समाप्ति पर प्रतिदर्श पर उपकरण के रूप में कक्कड़ का शिक्षण में रुचि पैमाने का उपयोग किया गया | इस अध्ययन के फलस्वरुप निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1. अधिकतर (61.32%) शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति औसत रुचि थी | 29.97% प्रशिक्षणार्थियों की औसत से निम्न रुचि थी | यह निष्कर्ष विश्वविद्यालयों में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अभिरुचि परीक्षा की आवश्यकता की ओर इंगित करता है |

2. निजी संस्थानों में अध्ययनरत् शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की रुचि सरकारी संस्थानों में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा तुलनात्मक रूप से अधिक थी |

- **राजेश्वरी, के) 02015)** 'क्वेस्ट फॉर क्वालिटी इम्प्रूवमेंट इन टीचर एजुकेशन विद स्पेशल रेफरेंस टू केरला बी0एड0 प्रोग्राम' का अध्ययन किया | निष्कर्ष में पाया कि शिक्षकों की गुणवत्ता में विकास हेतु अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में विकास करना आवश्यक है | दो वर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम शिक्षित, योग्य शिक्षकों के निर्माण में सक्षम है |
- **पाटीदार, जितेन्द्र कुमार (2015)** 'भावी शिक्षक एवं रिफ्लेक्शन एक दृष्टिकोण ' का अध्ययन किया | **निष्कर्ष** में पाया कि एन.सी.टी.ई. के रेगुलेशन 2014 द्वारा विकसित फ्रेमवर्क को प्रभावी रूप में क्रियान्वित करने की जरूरत है तभी हम एक श्रेष्ठ समाज अथवा राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे |
- **मेहता, दीपा (2016)** 'बैकड्राप आफ इण्ट्रोड्यूसिंग टू इयर बी0एड 0करिकुलम: इट्स विजन एण्ड डिजायर्ड चेंज ' का अध्ययन किया | **निष्कर्ष** में पाया कि अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की समय अवधि में वृद्धि करना कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक है | दो वर्षीय बी0एड 0पाठ्यक्रम में योग्य शिक्षक के सभी आवश्यक आयामों को सम्मिलित करना ही पर्याप्त नहीं है , बल्कि इसका लाभान्वितों पर प्रभावी क्रियान्वयन करना भी अति आवश्यक है | प्रभावी क्रियान्वयन हेतु कुछ प्रभावी उपागमों को निर्मित कर दो वर्षीय बी0एड 0पाठ्यक्रम से सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता है |

इस प्रकार सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने पर शोधकर्त्री ने पाया कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति अध्यापक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन नहीं किया गया है | अतः इस अध्याय के अन्तर्गत शोधकर्त्री द्वारा उक्त विषय की सार्थकता एवं उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए उपरोक्त वर्णित सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया | जिससे शोधकर्त्री को अपने विषय के अध्ययन की प्रक्रिया को निश्चित करने में पर्याप्त सहायता व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ |

अध्याय तृतीय

‘अध्ययन की योजना एवं प्रक्रिया’

तृतीय अध्याय

अध्ययन की योजना एवं प्रक्रिया

3.1 अध्ययन की योजना एवं प्रक्रिया

अनुसन्धान मानव को प्रगति की ओर ले जाने वाला एक आवश्यक तथा शक्तिशाली उपकरण है। शोध कार्य एक जलपोत के समान है जो सुदूर से गन्तव्य स्थल की ओर जाने के लिए बन्दरगाह से चलता है परन्तु यदि प्रारम्भ से ही दिशा निर्धारण में थोड़ी सी त्रुटि हो जाए तो भटक जाने की अधिक सम्भावना रहती है। अनुसन्धान कार्य मुख्यतः तीन बातों से सम्बन्धित होता है; समय, धन व श्रम। अत: अनुसन्धान को यथासम्भव जितना जल्दी एवं कम समय में पूर्ण किया जाएगा, अध्ययन के निष्कर्ष उतने ही अधिक समय-सापेक्ष एवं उपयोगी होंगे। इसी प्रकार से अनुसन्धान कार्य के लिए धन भी सीमित लगेगा। शोधकार्य के लिए आवश्यक होता है कि सीमित धन या लागत से उच्च कोटि के सत्य प्रमाणिक और विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त किए जाएं।

शोध कार्य में श्रम, क्षेत्र, कार्यकर्ता, प्रगणक, साक्षात्कारकर्ता आदि की सीमित उपलब्धता के कारण यह आवश्यक हो जाता है कि सीमितताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी समर्थता के आधार पर उच्च कोटि का शोधकार्य सम्पन्न किया जाए। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनुसन्धान प्रारूप का निर्माण किया जाता है। अनुसन्धान प्रारूप के निर्माण में उपर्युक्त तीनों सीमितताओं का ध्यान रखा जाता है व ऐसे प्रारूप का निर्माण किया जाता है कि शोधकर्ता उच्च कोटि का सिद्ध हो सके।

एक अच्छे अनुसन्धान के लिए आवश्यक है कि शोधकर्ता शोध प्रारम्भ करने से पूर्व शोध का विषय, अध्ययन की प्रकृति, पृष्ठभूमि, उद्देश्य, परिकल्पनाएं, तथ्यों के चयन का

आधार एवं क्षेत्र, विश्लेषण विधि, तथ्य संकलन की प्रविधियाँ आदि पूर्व में निश्चित कर लें। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही अनुसन्धान प्रारूप का निर्माण किया जाता है।

करलिंगर के अनुसार *"अनुसन्धान प्रारूप अन्वेषण की योजना, संरचना एक रणनीति है जिसकी रचना इस प्रकार की जाती है कि अनुसन्धान से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो सके तथा विविधताओं को नियन्त्रित किया जा सके। यह प्रारूप या योजना अनुसन्धान की सम्पूर्ण रूपरेखा या कार्यक्रम है जिसके अन्तर्गत प्रतिक्रिया की रूपरेखा सम्मिलित होती है जो उपकल्पनाओं के निर्माण तथा उनके परिचलनात्मक अभिप्रायों से लेकर आँकड़ों के अन्तिम विश्लेषण तक करता है।"*

अनुसन्धान प्रक्रिया नियन्त्रित एवं सुव्यवस्थित होती है। सही सूचना को एकत्रित कर तर्कसंगत विश्लेषण द्वारा आरम्भ में उठाए गए सुनियोजित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना अनुसन्धान है। योजना एक बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य है जिसमें क्रिया की विधि का सचेत या सही निर्धारण किया जाता है।

बुण्टज व ओडोनल के अनुसार *"योजना में कार्य करने से पूर्व ही यह निर्धारण कर लिया जाता है कि क्या करना है? किस प्रकार करना है? कब करना है? और किसके द्वारा किया जाने वाला है?"*

पी. वी. यंग (1966) के अनुसार *"अध्ययन प्रक्रिया उस गहनता का द्योतक है जिसके द्वारा शोध उपकरण सुनिश्चित होते हैं, उसका निर्माण होता है, न्यादर्श का चयन होता है तथा न्यादर्श पर उपकरण प्रशासित होते हैं। अतः शोध समस्या के लिए यह आवश्यक है कि निश्चित रूपरेखा तैयार की जाए क्योंकि अनुसन्धान की सफलता उसकी अध्ययन प्रक्रिया पर निर्भर है।"*

इस लघुशोध का विषय है “**बाँदा जनपद में अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमतों का अध्ययन।**”

अध्ययन के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को दृष्टिगत रखते हुए अनुसन्धान की योजना एवं प्रक्रिया में निम्नलिखित शीर्षकों पर विचार किया गया है -

1. अध्ययन विधि
2. न्यादर्श का चयन
3. उपकरण निर्माण
4. प्रदत्तों का फलांकन
5. प्रदत्तों का विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियाँ

3.2 अध्ययन विधि

किसी भी अनुसन्धान कार्य में कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं जो कि अतीत में घटित हो चुकी हैं तथा कुछ का अध्ययन वर्तमान में उन के स्वरूप के आधार पर किया जाता है तथा कुछ घटनाओं के भावी स्वरूप को जानने के लिए प्रयोग करने होते हैं इसके लिए अनेक अनुसन्धान विधियों जैसे- ऐतिहासिक अनुसन्धान, प्रयोगात्मक अनुसन्धान, वर्णनात्मक अनुसन्धान आदि का प्रयोग किया जाता है। चूँकि प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बाँदा जनपद के अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन करना है, अतः यह वर्णनात्मक शोध है।

वर्णनात्मक अनुसन्धान

वर्णनात्मक अनुसन्धान एक ऐसा अनुसन्धान है जो वर्तमान समस्या या परिस्थिति का वैज्ञानिक विश्लेषण एवं व्याख्या करता है और इस शोध अध्ययन में शोध विधियों का प्रयोग, वर्तमान स्थिति का वर्णन एवं व्याख्या करने हेतु किया गया है। वर्णनात्मक

अनुसन्धान के अन्तर्गत वर्तमान घटनाओं, सम्बन्धों तथा तथ्यों के अध्ययन को अधिक महत्व दिया जाता है और यह पता लगाया जाता है कि इसका वर्तमान स्वरूप कैसा है।

वर्णनात्मक अनुसन्धान के प्रकार –

वर्णनात्मक अनुसन्धान को अनेक प्रकार से वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है जिसमें **वान डैलेन (2004)** के अनुसार वर्गीकरण निम्न है –

- ❖ विकासात्मक अध्ययन
- ❖ अन्तर सम्बन्धों का अध्ययन
- ❖ सर्वेक्षण शोध का अध्ययन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसन्धान विधि के अन्तर्गत 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है क्योंकि शोध अध्ययन में आँकड़ों का संग्रहण सर्वेक्षण विधि द्वारा सहजता पूर्वक किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि द्वारा जनसंख्या में से न्यादर्श लेकर शोध की सम्पूर्ण प्रक्रिया को प्रतिस्थापित किया गया है।

सर्वेक्षण विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि के माध्यम से अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था के विद्यार्थियों के अभिमत आसानी से प्राप्त किए जा सकते हैं तथा इस विधि के माध्यम से वैज्ञानिक प्रतिचयन का आधार होने से प्रतिनिधि आँकड़े संकलित किए जा सकते हैं। शैक्षिक क्षेत्रों में 'सर्वेक्षण' अनुसन्धान का एक अभिन्न अंग रहा है। सर्वेक्षण का अर्थ प्रायः एक आलोचनात्मक निरीक्षण होता है, जिसका उद्देश्य सामाजिक क्षेत्र की किसी एक स्थिति अथवा उसके प्रचलन के सम्बन्ध में यथार्थ की सूचना प्राप्त करना होता है। उक्त विशेषताओं तथा प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में '**वर्णनात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि**' का प्रयोग किया है।

3.3 जनसंख्या

इकाइयों के समूचे समूह को जिसके लिए चर का मान निकलना अभीष्ट है, 'जनसंख्या' कहते हैं । शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के सभी व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है, वह सजातीय होती है, जैसे- रक्त परीक्षण के उदाहरण में शरीर का सम्पूर्ण रक्त जनसंख्या है । जनसंख्या का अर्थ अध्ययन की इकाइयों को समूह के रूप में लिया गया है । अध्ययन की इकाइयाँ मनुष्य, पशु, कोई वस्तु, कोई परीक्षण या कोई प्रयोग कुछ भी हो सकता है । प्रस्तुत अध्ययन में बाँदा जनपद में स्थित बी0एड0 संस्थानों में अध्ययनरत् विद्यार्थी अध्ययन की जनसंख्या हैं । बाँदा जनपद के मानचित्र के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इसके अन्तर्गत 5 तहसील हैं - बाँदा, पैलानी, अतर्रा, नरैनी, बबेरू । बाँदा जनपद में स्थित बी0एड0 महाविद्यालयों की सूची परिशिष्ट - 02 में संलग्न की गयी है।

3.4 न्यादर्श का चयन

न्यादर्श किसी भी कार्य की आधारशिला है यह आधारशिला जितनी सुदृढ़ होगी अनुसन्धान के परिणाम उतने ही विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होंगे। प्रतिदर्श को तभी उपयुक्त माना जा सकता है, जब वह सम्पूर्ण समष्टि का सही प्रतिनिधित्व करे। किसी अनुसन्धानकर्ता के लिए यह सम्भव नहीं है कि वह अल्प समय में सम्पूर्ण या समग्र के सभी व्यक्तियों एवं वस्तुओं को अपनी खोज या अध्ययन का विषय बना सके । अतः थोड़े व्यक्तियों, वस्तुओं या संस्थाओं आदि का चयन किया जाता है जो समग्र का पर्याप्त प्रतिनिधित्व कर सके । जिन पर किए गए अध्ययन के आधार पर समग्र के लिए निष्कर्ष निकाले जा सके । व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों के शोध कार्यों में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है । इसके बिना शोध कार्य को पूरा नहीं किया जा सकता है ।

जनसंख्या का जो अंश उपलब्ध होता है वही जनसंख्या का शुद्ध रूप में प्रतिनिधित्व करता है । किसी भी अनुसन्धान में प्रतिदर्श ऐसा होना चाहिए जिससे जनसंख्या के बारे में अनुमानों में कम से कम त्रुटि हो । जनसंख्या में से किसी विशिष्ट चर इकाइयों को चुन लिया

जाता है। चयन की इस प्रक्रिया को 'न्यादर्श का चयन' कहते हैं। **गुड एवं हैट (1952) के अनुसार-** *"एक न्यादर्श जैसा कि नाम से स्पष्ट है किसी विशाल सम्पूर्ण का छोटा प्रतिनिधि होता है।"* किसी अनुसन्धान कार्य के लिए यह आवश्यक होता है कि चयनित प्रतिदर्श का आकार जनसंख्या का सही प्रतिनिधित्व करे।

किसी भी अनुसन्धान प्रक्रिया के अन्तर्गत न्यादर्श चयन के दो प्रमुख आधार होते हैं-

- सम्भाव्य
- असम्भाव्य ।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधकर्त्री द्वारा असम्भाव्य प्रकार के 'सोद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श' का चयन किया गया है जिसमें समस्त जनसंख्या को प्रतिदर्श में सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार के प्रतिदर्श चयन विधि में शोधार्थी स्वविवेकानुसार प्रतिदर्श के सदस्यों की विलक्षणता को दृष्टिगत रखकर उनका चयन करता है। यह प्रतिदर्श पूर्णता शोधकर्त्री के निर्णय पर आश्रित होता है तथा यह निर्णय वह स्वयं शोध के उद्देश्यों की सिद्धि हेतु करता है।

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद का चयन किया गया है। अतः शोधकर्त्री द्वारा अपने चयनित किए गए शोध अध्ययन के अन्तर्गत न्यादर्श के आकार को निम्नांकित तालिकानुसार प्रस्तुत किया गया है –

तालिका- 3.1

शोध अध्ययन हेतु चयनित न्यादर्श

क्रम संख्या	संस्था	महाविद्यालय का नाम	पुरुष	महिला	योग
1.	अनुदान प्राप्त	अतर्रा पी. जी. कॉलेज, अतर्रा, बाँदा	13	12	25
2.	अनुदान प्राप्त	पंडित जे. एन. कॉलेज, बाँदा	12	13	25
3.	स्ववित्तपोषित	प्रो. दीनानाथ पाण्डेय महाविद्यालय, बदौसा, बाँदा	13	12	25
4	स्ववित्तपोषित	राजादेवी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाँदा	12	13	25
योग			50	50	100

3.5 शोध उपकरण

प्रत्येक अनुसन्धान के सन्दर्भ में प्रदत्तों के संग्रह हेतु कतिपय शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। उपकरणों से प्राप्त नवीन एवं गुणात्मक प्रदत्त अनुसन्धान में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह प्रदत्त ही अनुसन्धान कार्य का सही अर्थ देने में सहायक होते हैं। विभिन्न उद्देश्यों के आधार पर भिंन्न प्रकार की सूचनाएँ संकलित करने के लिए भिन्न प्रकार

के उपकरण उपयुक्त होते हैं। शोध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसन्धानकर्ता इन उपकरणों में से एक अथवा एक से अधिक उपकरणों का प्रयोग कर सकता है।

किसी भी अनुसन्धान की सफलता उपयुक्त उपकरण चयन पर निर्भर करती है। जिस प्रकार किसी मिस्त्री को एक इंजन या मशीन को ठीक करने के लिए अपने यंत्र बॉक्स में से एक उपकरण यंत्र की खोज करनी होती है ठीक उसी प्रकार किसी भी अनुसन्धान के अन्तर्गत समस्या के अध्ययन हेतु अनुसन्धानकर्ता को ऐसे उपकरण का चयन करना होता है जिसके आधार पर निम्नलिखित मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके-

1. अध्ययन समस्या के समुचित उत्तर की प्राप्ति हो सके।
2. अनुसन्धान के वस्तुपरक परिणाम उपलब्ध हो सकें।
3. अध्ययन के विश्वसनीय परिणाम प्राप्त हो सकें।
4. अध्ययन समस्या के वैध परिणाम प्राप्त हो सकें।

सारांशतः व्यावहारिक दृष्टि से उपकरण ऐसा होना चाहिए जिसके द्वारा अध्ययन में विशेष सुविधा रहे, उत्तरदाताओं से भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित करने में कठिनाई ना हो तथा वांछित सूचनाएँ विश्वसनीय एवं वैध रूप में प्राप्त हो। प्रायः अनुसन्धान कार्य में दो प्रकार के उपकरण प्रयुक्त होते हैं-

1. मानवीकृत उपकरण
2. स्वनिर्मित उपकरण।

वर्तमान शोधकार्य के सन्दर्भ में कोई मानवीकृत् उपकरण उपलब्ध नहीं था। अतः शोधकार्य को पूर्ण करने हेतु शोधार्थी द्वारा एक नवीन उपकरण निर्माण की आवश्यकता अनुभव की गई। फलस्वरूप शोधार्थी ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित नवीन उपकरण निर्मित करने का निश्चय किया। प्रस्तुत अनुसन्धान में शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित 'शिक्षण व्यवसाय अभिमत मापनी' का प्रयोग किया गया है।

3.5.1 उपकरण का विवरण

शोधार्थी द्वारा अपनी अनुसंधानात्मक समस्या को दृष्टिगत रखते हुए स्वनिर्मित उपकरण 'शिक्षण व्यवसाय अभिमत मापनी' का निर्माण सोद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया है । शोधकर्त्री द्वारा उपकरण का निर्माण शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों को दृष्टिगत रखते हुए किया गया है । जिससे शिक्षण व्यवसाय के प्रति बहुआयामी दृष्टिकोण से अध्यापक शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के अभिमतों को जाना जा सके । अतः शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत अध्ययन हेतु शिक्षण व्यवसाय के निम्नांकित आयामों का निर्धारण किया गया है-

1. शिक्षण व्यवसाय सम्मानजनक व्यवसाय
2. शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि
3. शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली
4. शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि
5. शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता
6. शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा
7. शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा ।

3.5.2 प्रश्नों का निर्माण

शोधकर्त्री द्वारा प्रश्नावली के अंतिम प्रारूप के अन्तर्गत उन प्रश्नों को छोड़ दिया गया है जो विषयगत एक पक्षीय एवं सम्प्रेषणीय नहीं थे । शोधार्थी द्वारा प्रश्न निर्माण प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रश्नों का निर्माण स्वानुभव, सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन तथा अतर्रा पी. जी. कॉलेज, अतर्रा, बाँदाके शिक्षक-शिक्षा संकाय के शिक्षकों के मत एवं मूल्यांकन के आधार पर किया गया है । इस मापनी में प्रश्नों की कुल संख्या 35 है ।

3.6 परीक्षणों का प्रशासन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से सम्बद्ध बाँदा जनपद में स्थित बी0एड0 महाविद्यालयों की सूची एकत्र कर सर्वप्रथम न्यादर्श हेतु चयनित अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था के प्राचार्यों से संपर्क किया गया एवं लघुशोध के उद्देश्य की पूर्ति तथा विश्वसनीय आँकड़ो के संकलन हेतु शोधार्थी ने प्राचार्य को स्वयं का परिचय दिया। तत्पश्चात उन्हें शोध उद्देश्य से अवगत कराया एवं उनसे आँकड़ो के संग्रहण हेतु अनुमति प्राप्त की।

बी0एड0 के विद्यार्थियों से मिलकर उन्हें मापनी से अवगत कराया एवं उन्हें आश्वस्त किया कि इसका प्रयोग शोधकार्य हेतु निजता को ध्यान में रखते हुए किया जाएगा। मापनी को पूर्ण करने के बाद परीक्षणों को एकत्रित कर लिया गया तथा सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

3.7 परीक्षणों का फलांकन

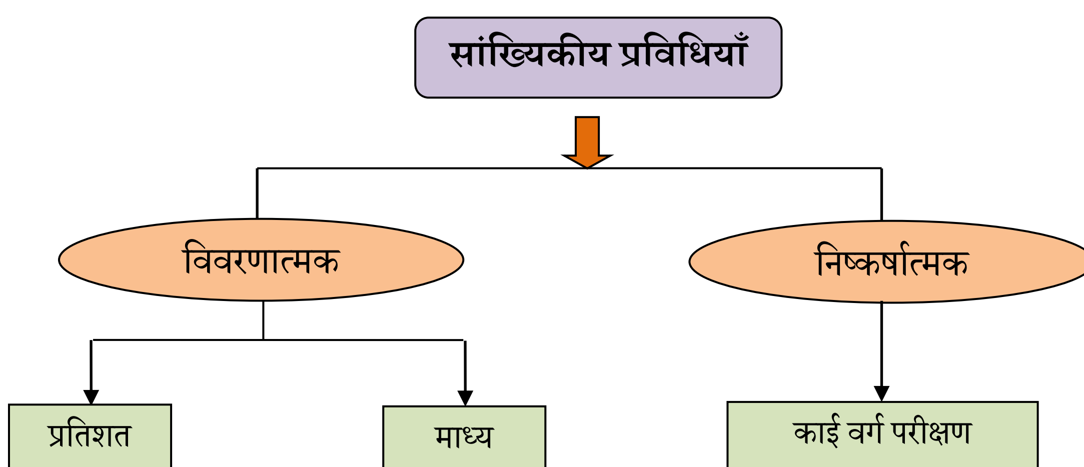
किसी भी शोधकार्य से सम्बन्धित सूचनाएँ तभी सार्थक होती हैं जब ये परिमाणात्मक रूप में प्रस्तुत की जाए क्योंकि किसी भी तथ्य को गुणात्मक रूप से समझने की अपेक्षा परिमाणात्मक रूप में समझना आसान होता है। अध्ययन से सम्बन्धित सभी उपकरणों के प्रशासन के पश्चात् शोधकर्त्री ने उनसे प्राप्त सकारात्मक, नकारात्मक एवं अनिश्चित अनुक्रियाओं को क्रमशः हां, नहीं एवं अनिश्चित आवृत्तियों की टैली चिन्हों के माध्यम से गणना की। इस मापनी के अन्तर्गत विद्यार्थियों से उनके मत मांगे गए थे। अतः विद्यार्थियों के मत के आधार पर उन्हें प्रत्येक अनुक्रिया के लिए एक अंक दिया गया।

3.8 प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

सांख्यिकी वैज्ञानिक विधि की वह शाखा है जो प्रदत्तों का विवेचन करती है। ये प्रदत्त गणना एवं मापन से प्राप्त किए जाते हैं। **डब्लू. आई. किंग के अनुसार-** *"सांख्यिकी*

पद्धति वह प्रणाली है जिसमें सामूहिक रूप से प्राकृतिक एवं सामाजिक घटनाओं का अध्ययन, गणना अथवा अनुमान के आधार पर संकलित अंकों की विवेचना द्वारा प्राप्त फल के आधार पर किया जाता है।"

प्रस्तुत अध्ययन में बी0एड0 कर रहे विद्यार्थियों के अभिमतों को जानने हेतु निम्नांकित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है जो रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट होती हैं-



प्रतिशत-

गणित में किसी अनुपात को व्यक्त करने का एक तरीका प्रतिशत है। प्रतिशत का अर्थ है प्रति सौ या प्रति सैकड़ा (% = 1/100) एक सौ में एक। दूसरे शब्दों में प्रतिशत एक भिन्न है जिसका हर 100 होता है और भिन्न का अंश 'प्रतिशत की दर' कहलाता है। इसे प्रायः % चिह्नों द्वारा दर्शाया जाता है।

प्रतिशत का सूत्र -

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{संख्या}}{\text{कुल संख्या}} \times 100$$

माध्य -

गणित एवं सांख्यिकी में 'समान्तर माध्य' नमूने के आँकड़ों की केन्द्रीय प्रवृत्ति की एक गणितीय माप है। इसे प्रायः 'औसत' या 'माध्य' भी कहते हैं। एक समंकमाला के पदों के मूल्यों के योग में उनकी संख्या से भाग देने पर प्राप्त संख्या 'माध्य' कहलाती है।

माध्य का सूत्र -

$$X = \frac{\sum fx}{N}$$

जहाँ X= समान्तर माध्य

f = आवृत्ति

x = मध्य बिन्दु

$\sum fx$ = आवृतियों एवं मध्य बिंदुओं के गुणनफल का योग

N = आवृत्तियों का योग

काई-वर्ग परीक्षण -

काई-वर्ग परीक्षण या x^2 परीक्षण सांख्यिकीय का परिकल्पना परीक्षण है जिसमें परीक्षण सांख्यिकी का नमूना वितरण काई वर्ग वितरण होता है, जब कोई परिकल्पना सत्य नहीं है। **गैरेट के अनुसार** *"प्राप्त आवृत्तियों और प्रत्याशित आवृतियों के अन्तर का वर्ग किया जाता है, प्रत्येक अन्तर का वर्ग करके उसकी प्रत्याशित आवृत्ति से भाग करते हैं, इनका योग करने पर काई-वर्ग का मान प्राप्त होता है।"*

काई-वर्ग परीक्षण $x^2 = \sum \left[\frac{(f_0 - f_e)^2}{f_e}\right]$

जहाँ x^2 = काई-वर्ग परीक्षण

$\sum$ = योग

f_0 = प्राप्त या मापित आवृत्ति

f_e = प्रत्याशित आवृत्ति

दण्ड आरेख

दण्ड आरेख अथवा बार चार्ट (Bar chart) या बार डायग्राम यह एक प्रमुख एकविमीय आरेख है। इसके द्वारा एकल अथवा सामूहिक सांख्यिकीय आँकड़ो के मानों को आयताकार दण्डों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जहाँ प्रत्येक दण्ड की लम्बाई उसके द्वारा प्रदर्शित किये जा रहे मान के अनुपात में रखी जाती है।

अध्याय चतुर्थ

‘सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचन’

अध्याय चतुर्थ

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचन

प्रस्तुत अध्ययन में पूर्व वर्णित परीक्षणों के प्रशासन एवं फलांकन के पश्चात् जो प्राप्तांक प्राप्त हुए उनका विश्लेषण एवं विवेचन किया गया है। प्रदत्तों का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता, अगर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या न की जाए। इस अध्याय में दोनों का वर्णन किया गया है, जिससे अर्थपूर्ण वास्तविक स्थिति सामने आ सके। दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे पर आधारित हैं एवं एक-दूसरे के बिना अर्थहीन हैं, इसलिए इनका अर्थ जानना बहुत महत्वपूर्ण है।

4.1 प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचन

प्रदत्त सामग्री का विश्लेषण करके अनेक महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं। विश्लेषण का अर्थ किसी सूची पत्र के रूप में वस्तु का वास्तविक अर्थ जानने के लिए अध्ययन माना है। इसमें वर्तमान कारकों को अलग-अलग कर सरलीकरण करके इस रूप में व्यवस्थित किया जाता है कि उनकी व्याख्या की जा सके। व्याख्या की प्रक्रिया अति आवश्यक है जिसमें कथन व परिणाम उनके अर्थ को बताता है। उनकी सार्थकता क्या है? समस्या का परिणाम क्या है? प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचन उद्देश्यों की प्रकृति पर निर्भर करता है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या को निम्न दो खण्डों में प्रस्तुत किया गया है -

प्रथम खण्ड -

1. शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी0एड0 संस्था में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन।
2. शिक्षण व्यवसाय के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन।
3. शिक्षण व्यवसाय के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन।
4. शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन।
5. शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन।

द्वितीय खण्ड -

1. शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रथम खण्ड

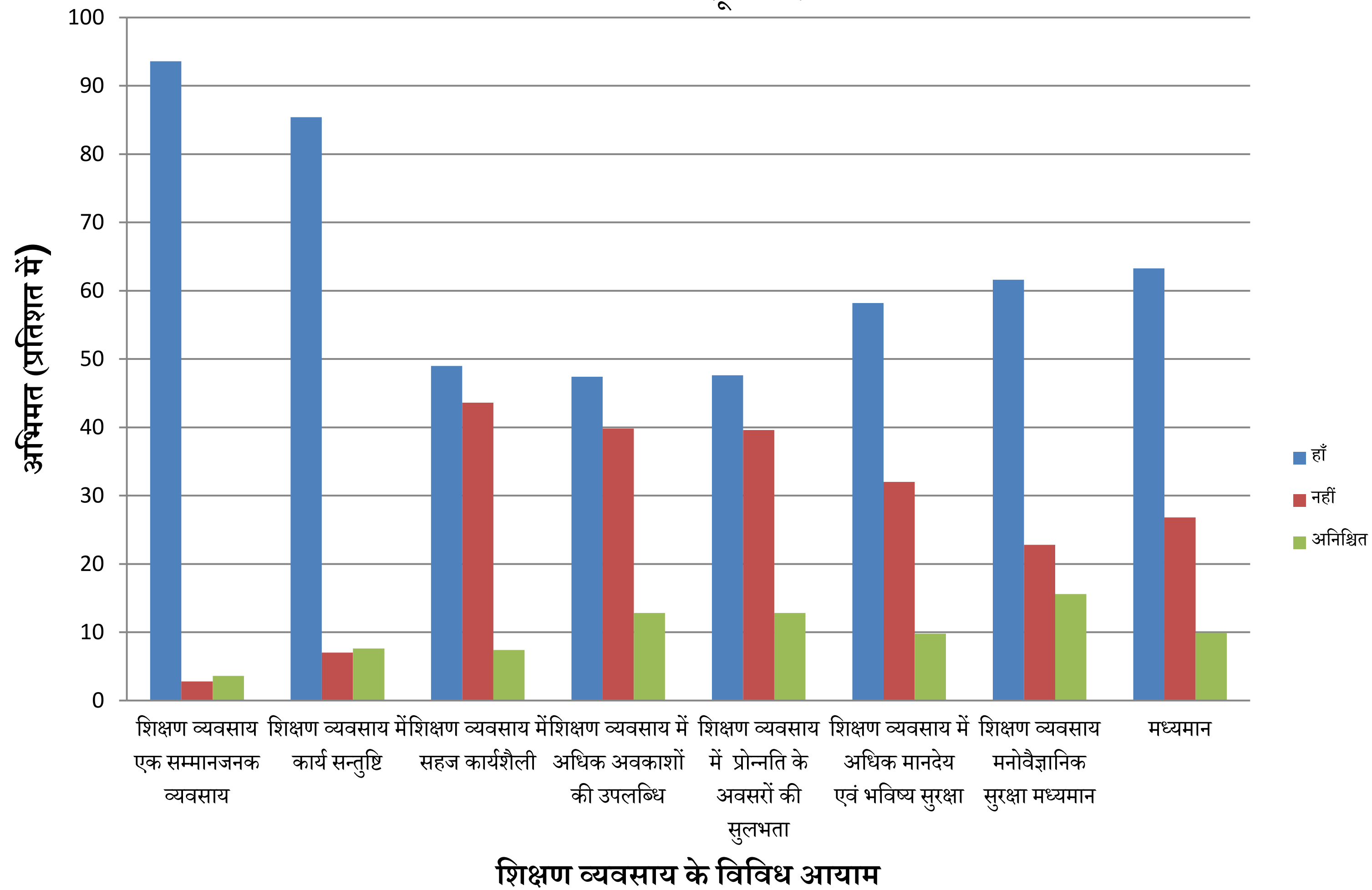
शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्यानुसार बी0एड0 कर रहे विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमत जानने हेतु शिक्षण व्यवसाय को विविध आयामों में वर्गीकृत करके आवृतियों के आधार पर प्रतिशत की गणना की गई, जिनके विश्लेषण एवं व्याख्या को तालिका के माध्यम से वर्णित किया गया।

तालिका संख्या- 4.1

शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिमत

क्रम संख्या	शिक्षण व्यवसाय के विविध आयाम	हाँ	नहीं	अनिश्चित
		(प्रतिशत में)		
1	शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय	93.6	2.8	3.6
2	शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि	85.4	7	7.6
3	शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली	49	43.6	7.4
4	शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि	47.4	39.8	12.8
5	शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता	47.6	39.6	12.8
6	शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा	58.2	32	9.8
7	शिक्षण व्यवसाय मनोवैज्ञानिक सुरक्षा	61.6	22.8	15.6
	मध्यमान	63.26	26.8	9.94


चित्र सूची - 4.1
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
अभिमत (प्रतिशत में)
हाँ
नहीं
अनिश्चित
शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय
शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि
शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली
शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि
शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता
शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा
शिक्षण व्यवसाय मनोवैज्ञानिक सुरक्षा मध्यमान
मध्यमान
शिक्षण व्यवसाय के विविध आयाम

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों ने 'शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय' के प्रति 93.6% विद्यार्थियों ने सकारात्मक अभिमत दिए, 2.8% विद्यार्थियों ने नकारात्मक अभिमत दिए जबकि 3.6% विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति 85.4% विद्यार्थियों ने सकारात्मक अभिमत दिए, 7% विद्यार्थियों ने नकारात्मक अभिमत दिए जबकि 7.6% विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली' के प्रति 49% विद्यार्थियों ने सकारात्मक अभिमत दिए, 43.6% विद्यार्थियों ने नकारात्मक अभिमत दिए जबकि 7.4% विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि' के प्रति 47.4% विद्यार्थियों ने सकारात्मक अभिमत दिए, 39.8% विद्यार्थियों ने नकारात्मक अभिमत दिए जबकि 12.8% विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति 47.6% विद्यार्थियों ने सकारात्मक अभिमत दिए, 39.6% विद्यार्थियों ने नकारात्मक अभिमत दिए जबकि 12.8% विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा' के प्रति 58.2% विद्यार्थियों ने सकारात्मक अभिमत दिए, 32% विद्यार्थियों ने नकारात्मक अभिमत दिए जबकि 9.8% विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा’ के प्रति 61.6% विद्यार्थियों ने सकारात्मक अभिमत दिए, 22.8% विद्यार्थियों ने नकारात्मक अभिमत दिए जबकि 15.6% विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों’ के प्रति बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में 63.6% विद्यार्थियों ने सकारात्मक अभिमत दिए, 26.8% विद्यार्थियों ने नकारात्मक अभिमत दिए जबकि 9.94% विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

अतः कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का दृष्टिकोण सकारात्मक है।

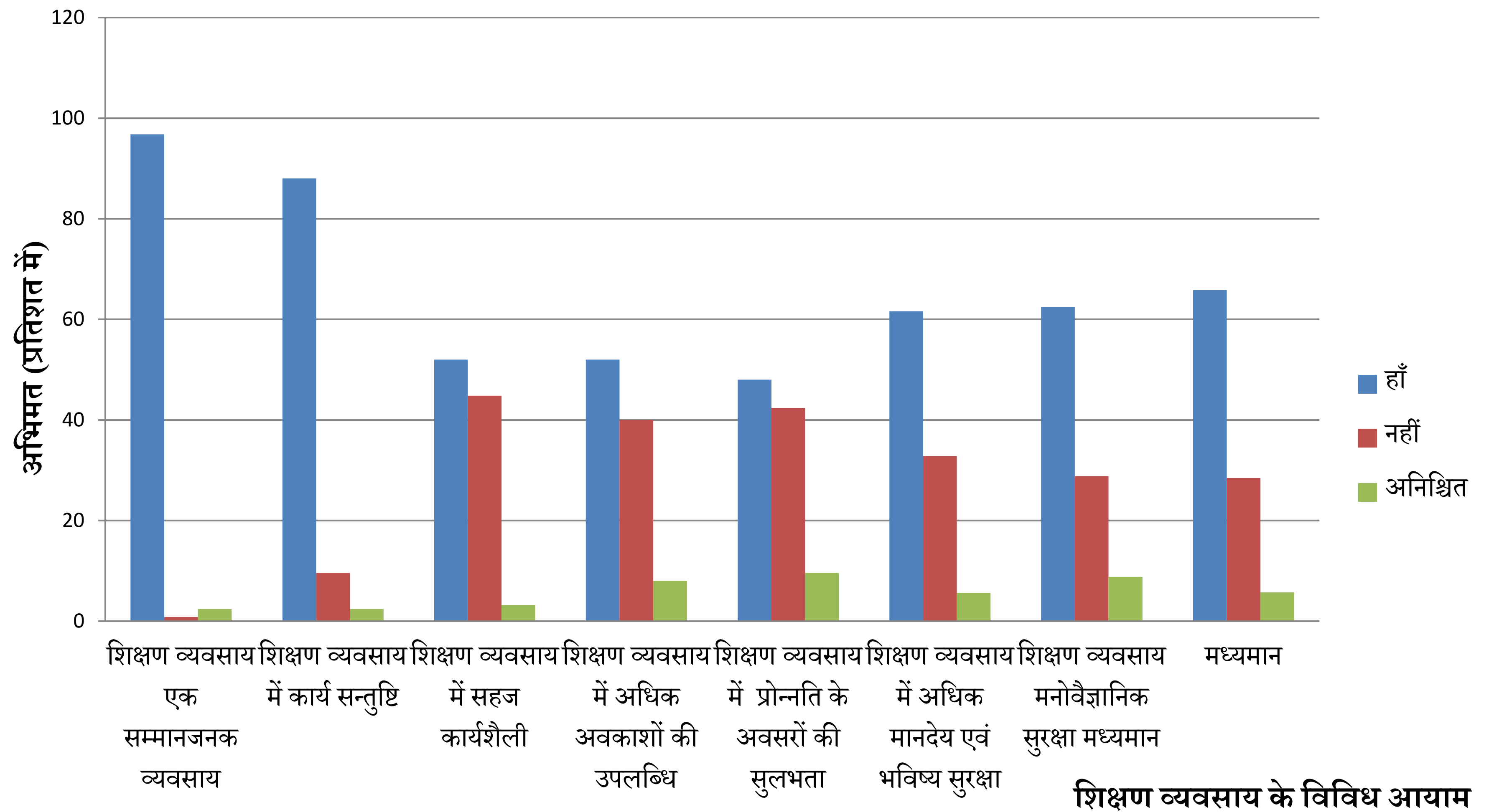
शिक्षण व्यवसाय के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्यानुसार अनुदान प्राप्त महाविद्यालयों में बी0एड0 कर रहीं महिला विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमत जानने हेतु शिक्षण व्यवसाय को विविध आयामों में वर्गीकृत करके आवृतियों के आधार पर प्रतिशत की गणना की गई। जिनके विश्लेषण एवं व्याख्या को तालिका के माध्यम से वर्णित किया गया है।

तालिका संख्या- 4.2

शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमत

क्रम संख्या	शिक्षण व्यवसाय के विविध आयाम	हाँ	नहीं	अनिश्चित
		(प्रतिशत में		
1	शिक्षण व्यवसाय सम्मानजनक व्यवसाय	96.8	0.8	2.4
2	शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि	88	9.6	2.4
3	शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली	52	44.8	3.2
4	शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि	52	40	8
5	शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता	48	42.4	9.6
6	शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा	61.6	32.8	5.6
7	शिक्षण व्यवसाय मनोवैज्ञानिक सुरक्षा	62.4	28.8	8.8
	मध्यमान	65.83	28.46	5.71


चित्र सूची - 4.2
120
100
80
60
40
20
0
अभिमत (प्रतिशत में)
हाँ
नहीं
अनिश्चित
शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय
शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि
शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली
शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि
शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता
शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा
शिक्षण व्यवसाय मनोवैज्ञानिक सुरक्षा मध्यमान
मध्यमान
शिक्षण व्यवसाय के विविध आयाम

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में 'शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय' के प्रति 96.8% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 0.8% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 2.4% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति 88% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 9.6% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 2.4% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली' के प्रति 52% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 44.8% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 3.2% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि' के प्रति 52% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 40% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 8% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति 48% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 42.4% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 9.6% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा' के प्रति 61.6% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 32.8% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 5.6% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा’ के प्रति 62.4% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 28.8% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 8.8% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों’ के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में 65.83% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 28.46% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 5.71% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

अतः कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों का दृष्टिकोण सकारात्मक है।

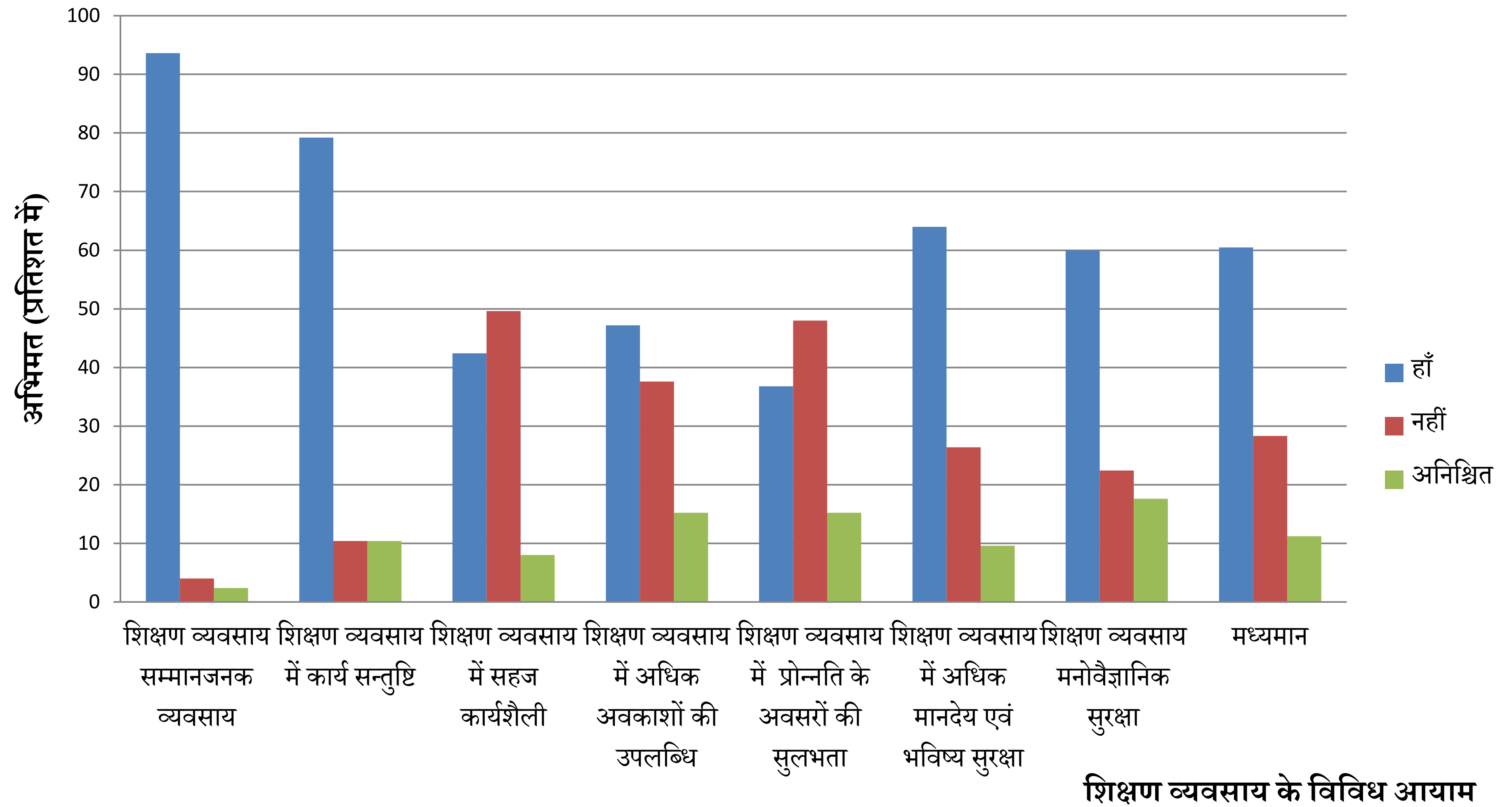
शिक्षण व्यवसाय के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन

महिला विद्यार्थियों के समान ही पुरुष विद्यार्थियों का अभिमत जानने हेतु भी आवृतियों के आधार पर प्रतिशत की गणना की गई, जिसको निम्न तालिका के माध्यम से वर्णित किया गया है।

तालिका संख्या- 4.3

शिक्षण व्यवसाय के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमत

क्रम संख्या	शिक्षण के विविध आयाम	हाँ	नहीं	अनिश्चित
		(प्रतिशत में)		
1	शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय	93.6	4	2.4
2	शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि	79.2	10.4	10.4
3	शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली	42.4	49.6	8
4	शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि	47.2	37.6	15.2
5	शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता	36.8	48	15.2
6	शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा	64	26.4	9.6
7	शिक्षण व्यवसाय मनोवैज्ञानिक सुरक्षा	60	22.4	17.6
	मध्यमान	60.46	28.34	11.2


चित्र सूची - 4.3
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
अभिमत (प्रतिशत में)
शिक्षण व्यवसाय सम्मानजनक व्यवसाय
शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि
शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली
शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि
शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता
शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा
शिक्षण व्यवसाय मनोवैज्ञानिक सुरक्षा
मध्यमान
हाँ
नहीं
अनिश्चित
शिक्षण व्यवसाय के विविध आयाम

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों ने 'शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय' के प्रति 93.6% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 4% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 2.4% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए। 'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति 79.2% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 10.4% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 10.4% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली' के प्रति 42.4% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 49.6% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 8% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि' के प्रति 47.2% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 37.6% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 15.2% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति 36.8% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 48% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 15.2% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा' के प्रति 64% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 26.4% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 9.6% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा’ के प्रति 60% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 22.4% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 17.6% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों’ के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में 60.46% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 28.34% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 11.2% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

अतः कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति पुरुष विद्यार्थियों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक है। शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता से अनभिज्ञ होने के कारण पुरुष विद्यार्थियों ने इस आयाम को सर्वाधिक नकारात्मक अभिमत प्रदान किए।

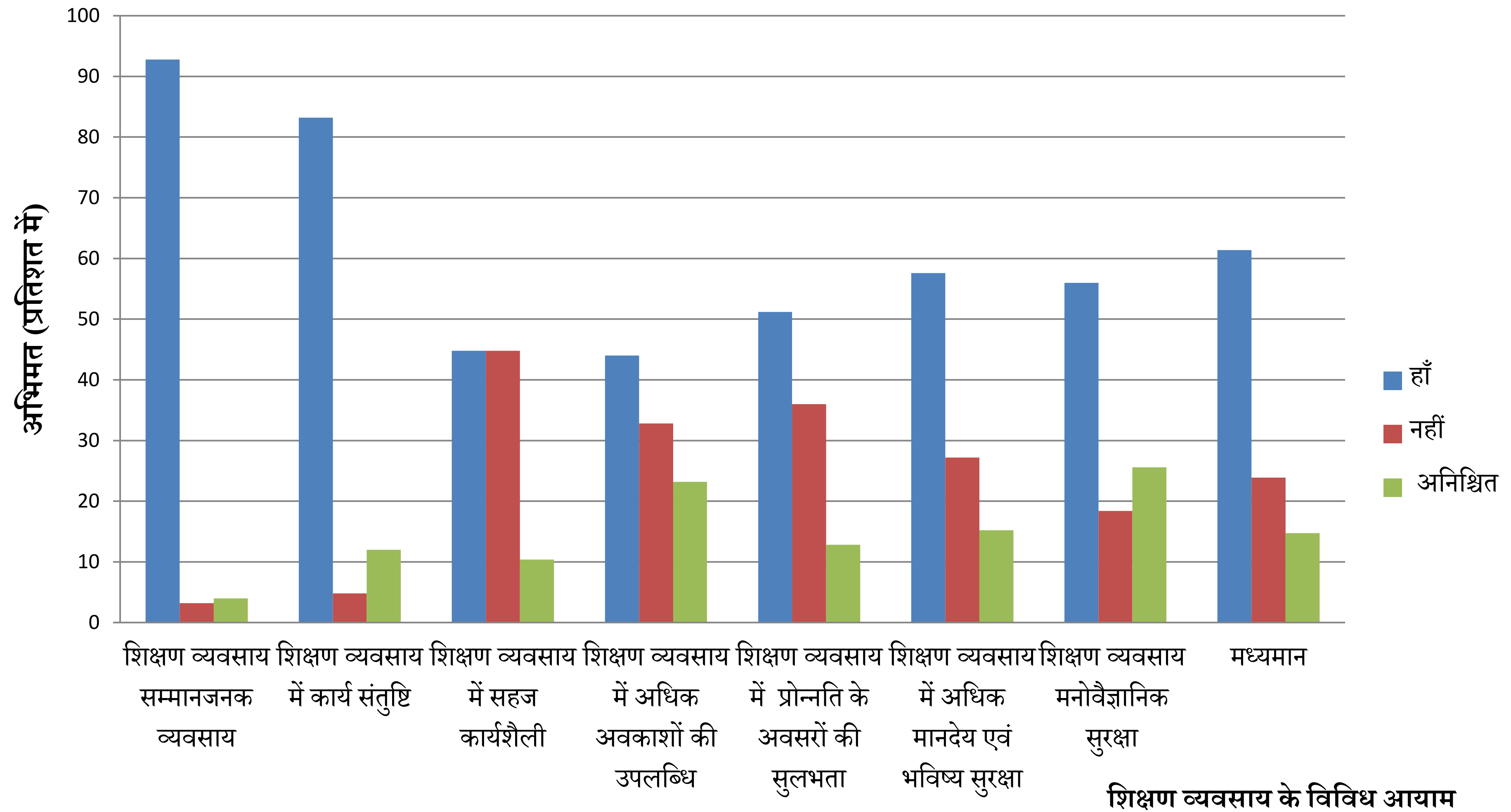
शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्यानुसार महिला विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिमत जानने हेतु शिक्षण व्यवसाय को विविध आयामों में वर्गीकृत करके आवृतियों के आधार पर प्रतिशत की गणना की गई । जिनके विश्लेषण एवं व्याख्या को तालिका के माध्यम से वर्णित किया गया है ।

तालिका संख्या- 4.4

शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमत

क्रम संख्या	शिक्षण व्यवसाय के विविध आयाम	हाँ	नहीं	अनिश्चित
		(प्रतिशत में)		
1	शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय	92.8	3.2	4
2	शिक्षण व्यवसाय में कार्य संतुष्टि	83.2	4.8	12
3	शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली	44.8	44.8	10.4
4	शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि	44	32.8	23.2
5	शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता	51.2	36	12.8
6	शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा	57.6	27.2	15.2
7	शिक्षण व्यवसाय मनोवैज्ञानिक सुरक्षा	56	18.4	25.6
	मध्यमान	61.37	23.89	14.74


चित्र सूची - 4.4
अभिमत (प्रतिशत में)
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
हाँ
नहीं
अनिश्चित
शिक्षण व्यवसाय सम्मानजनक व्यवसाय
शिक्षण व्यवसाय में कार्य संतुष्टि
शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली
शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि
शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता
शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा
शिक्षण व्यवसाय मनोवैज्ञानिक सुरक्षा
मध्यमान
शिक्षण व्यवसाय के विविध आयाम

‘शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा’ के प्रति 56% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 18.4% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक और 25.6% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों’ के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में 61.37% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 23.89% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 14.74% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

अतः कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोषित संस्था की महिला विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक है। शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के प्रति अधिकतर महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों ने ‘शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय’ के प्रति 92.8% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 3.2% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक और 4% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि’ के प्रति 83.2% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 4.8% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक और 12% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली’ के प्रति 44.8% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 44.8% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक और 10.4% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि’ के प्रति 44% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 33.8% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक और 23.2% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता’ के प्रति 51.2% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 36% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक और 12.8% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा’ के प्रति 57.6% महिला विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 27.2% महिला विद्यार्थियों ने नकारात्मक और 15.2% महिला विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

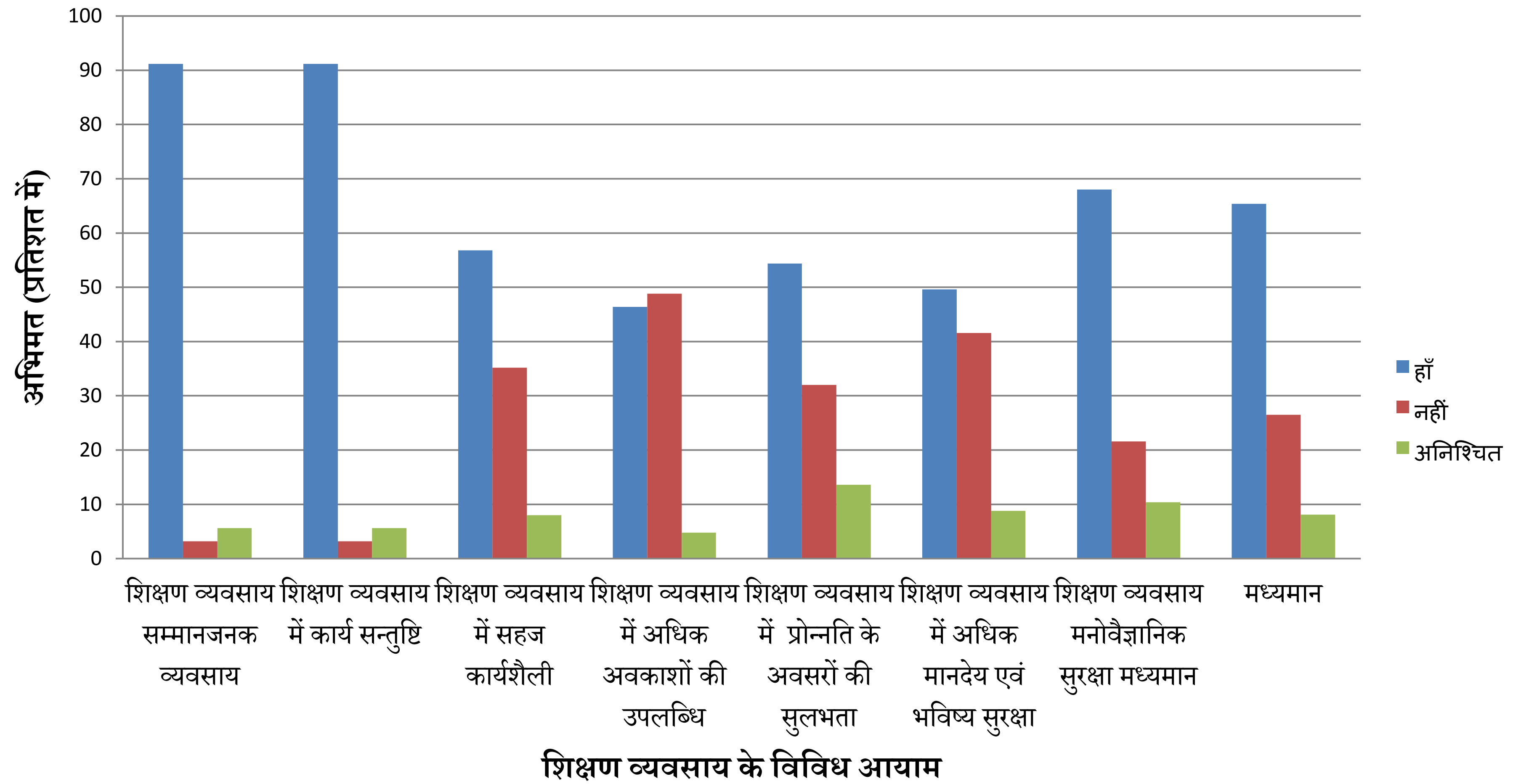
शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन

महिला विद्यार्थियों के समान ही पुरुष विद्यार्थियों का आभिमत जानने हेतु भी आवृतियों के आधार पर प्रतिशत की गणना की गई , जिसको तालिका के माध्यम से वर्णित किया गया है।

तालिका संख्या- 4.5

शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमत

क्रम संख्या	शिक्षण व्यवसाय के विविध आयाम	हाँ	नहीं	अनिश्चित
		(प्रतिशत में)		
1	शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय	91.2	3.2	5.6
2	शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि	91.2	3.2	5.6
3	शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली	56.8	35.2	8
4	शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि	46.4	48.8	4.8
5	शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता	54.4	32	13.6
6	शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा	49.6	41.6	8.8
7	शिक्षण व्यवसाय मनोवैज्ञानिक सुरक्षा	68	21.6	10.4
	मध्यमान	65.37	26.51	8.12



चित्र सूची - 4.5
अभिमत (प्रतिशत में)
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0
हाँ
नहीं
अनिश्चित
शिक्षण व्यवसाय सम्मानजनक व्यवसाय
शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि
शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली
शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि
शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता
शिक्षण व्यवसाय में अधिक मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा
शिक्षण व्यवसाय मनोवैज्ञानिक सुरक्षा मध्यमान
मध्यमान
शिक्षण व्यवसाय के विविध आयाम

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों ने 'शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय' के प्रति 91.2% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 3.2% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 5.6% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए। 'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति 91.2% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 3.2% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 5.6% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली' के प्रति 56.8% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 35.2% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 8% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धि' के प्रति 46.4% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 48.8% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 4.8% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति 54.4% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 32% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 13.6% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा' के प्रति 49.6% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 41.6% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 8.8% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

'शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा' के प्रति 68% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 21.6% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 10.4% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

‘शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों’ के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में 65.37% पुरुष विद्यार्थियों ने सकारात्मक, 26.51% पुरुष विद्यार्थियों ने नकारात्मक जबकि 8.12% पुरुष विद्यार्थियों ने अनिश्चित अभिमत दिए।

अतः कहा जा सकता है कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक है। शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता के प्रति पुरुष विद्यार्थियों ने अधिक अनिश्चितता व्यक्त की।

द्वितीय खण्ड

शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों का तुलनात्मक

अध्ययन

तालिका संख्या- 4.6

‘शिक्षण व्यवसाय सम्मानजनक व्यवसाय’ के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के मध्य काई-वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	Fo	121	1	3	125
	Fe	(118.5)	(2.5)	(4)	
स्ववित्तपोषित	Fo	116	4	5	125
	fe	(118.5)	(2.5)	(4)	
योग		237	5	8	250
$X^2 = 2.4$		df = 2			

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका संख्या - 4.6 से स्पष्ट होता है कि ‘शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय’ के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों का काई-वर्ग मान 2.4 है, जो सार्थकता स्तर 0.01 के मान से कम है। इन दोनों संस्थाओं की विद्यार्थियों के अभिमतों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

जिसका तात्पर्य है अनुदान प्राप्त संस्था की महिलाएँ एवं स्ववित्तपोषित संस्था की महिलाएँ शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय के प्रति समान दृष्टिकोण रखती हैं।

तालिका संख्या- 4.7

'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के मध्य काई-वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	Fo	110	12	3	125
	fe	(107)	(9)	(9)	
स्ववित्तपोषित	Fo	104	6	15	125
	fe	(107)	(9)	(9)	
योग		214	18	18	250
$X^2 = 10.168$			df = 2		

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों में काई वर्ग का मान 10.168 है, जो सार्थकता स्तर 0.01 के मान से अधिक है। इन दोनों संस्थाओं की विद्यार्थियों के अभिमतों में सार्थक अन्तर पाया गया तथा शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अतः स्पष्ट होता है कि अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिलाओं के अभिमतों में 'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति भिन्नता पाई जाती है। अनुदान प्राप्त महिलाएँ स्ववित्तपोषित महिलाओं की तुलना में शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि अधिक महसूस करती हैं इसका कारण अनुदान प्राप्त संस्थाओं में शैक्षिक वातावरण, शैक्षिक प्रक्रिया, शिक्षकों

का सकारात्मक दृष्टिकोण एवं योग्य शिक्षकों का होना हो सकता है। प्रायः यह पाया जाता है कि स्ववित्तपोषित संस्थाओं में शिक्षण प्रक्रिया अप्रभावी एवं योग्य शिक्षकों का अभाव होता है। अतः इसी कारण अनुदान प्राप्त संस्था की महिला विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय में अधिक कार्य सन्तुष्टि महसूस करती हैं।

तालिका संख्या- 4.8

'शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	65	56	4	125
	fe	(60.5)	(56)	(8.5)	
स्ववित्तपोषित	fo	56	56	13	125
	fe	(60.5)	(56)	(8.5)	
योग		121	112	17	250
$X^2 = 5.42$		df = 2			

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका संख्या- 4.8 से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों में काई वर्ग का मान 5.42 आया है जो 0.01 के सार्थक स्तर के मान से कम है। जिसका

तात्पर्य है इन दोनों संस्थाओं की महिला अभ्यार्थियों के अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अनुदान प्राप्त महिलाएँ एवं स्ववित्तपोषित महिलाएँ शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली के प्रति समान दृष्टिकोण रखती हैं।

तालिका संख्या- 4.9

'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	65	50	10	125
	Fe	(60)	(45.5)	(19.5)	
स्ववित्तपोषित	fo	55	41	29	125
	fe	(60)	(45.5)	(19.5)	
योग		120	91	39	250
$X^2 = 10.98$			df = 2		

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका संख्या- 4.9 से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थाओं में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों में काई वर्ग का मान 10.98 आया है जो 0.01 के सार्थक स्तर के मान से

अधिक है। जिसका तात्पर्य है कि इन दोनों संस्थाओं की महिला विद्यार्थियों के अभिमतों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

स्ववित्तपोषित संस्था की महिलाओं की अपेक्षा अनुदान प्राप्त संस्था की महिलाएँ इस व्यवसाय में अवकाशों की उपलब्धता को उचित मानती हैं क्योंकि अनुदान प्राप्त संस्था की महिलाएँ यह सोचती हैं कि इस व्यवसाय में अवकाश लेने के लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता नहीं होती और अवकाश प्राप्त करने से वेतन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका संख्या- 4.10

'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	60	53	12	125
	fe	(62)	(49)	(14)	
स्ववित्तपोषित	fo	64	45	16	125
	fe	(62)	(49)	(14)	
योग		124	98	28	250
$X^2 = 1.36$		df = 2			

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका संख्या- 4.10 से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थाओं में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों में काई वर्ग का मान 1.36 आया है जो 0.01 के सार्थक स्तर के मान से कम है।

जिसका तात्पर्य है कि इन दोनों संस्थाओं की महिला अभ्यर्थी के अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अत: यहाँ शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अनुदान प्राप्त महिलाएँ एवं स्ववित्तपोषित संस्था की महिलाएँ 'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति समान दृष्टिकोण रखती हैं।

तालिका संख्या- 4.11

'शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	77	41	7	125
	fe	(74.5)	(37.5)	(13)	
स्ववित्तपोषित	fo	72	34	19	125
	fe	(74.5)	(37.5)	(13)	
योग		149	75	26	250
$X^2 = 6.36$		df = 2			

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका संख्या- 4.11 से स्पष्ट होता है कि ‘शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा’ के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों के मध्य काई वर्ग का मान 6.36 आया है जो 0.01 के सार्थक स्तर के मान से कम है।

जिसका तात्पर्य है कि इन दोनों संस्थाओं की महिला अभ्यर्थियों के अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अत: शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अनुदान प्राप्त महिलाएँ एवं स्ववित्तपोषित संस्था की महिलाएँ ‘शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा’ के प्रति समान दृष्टिकोण रखती हैं।

तालिका संख्या- 4.12

‘शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा’ के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	78	36	11	125
	fe	(74)	(29.5)	(21.5)	
स्ववित्तपोषित	fo	70	23	32	125
	fe	(74)	(29.5)	(21.5)	
योग		148	59	43	250
$X^2 = 13.56$			df = 2		

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

उपरोक्त तालिका संख्या- 4.12 से स्पष्ट होता है की 'शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के अभिमतों के मध्य काई वर्ग का मान 13.56 आया है जो 0.01 के सार्थक स्तर के मान से अधिक है। इसका तात्पर्य है कि इन दोनों संस्थाओं की महिला विद्यार्थियों के अभिमतों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अनुदान प्राप्त संस्था की महिलाएँ स्ववित्तपोषित संस्था की महिलाओं की अपेक्षा शिक्षण व्यवसाय में अधिक मनोवैज्ञानिक सुरक्षा महसूस करती हैं क्योंकि अनुदान प्राप्त संस्था की महिलाएँ सामाजिक सम्बन्धों एवं समायोजन स्थापित करने में दक्ष होती हैं।

शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या- 4.13

'शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	117	5	3	125
	fe	(115.5)	(4.5)	(5)	
स्ववित्तपोषित	fo	114	4	7	125
	fe	(115.5)	(4.5)	(5)	
योग		231	9	10	250
$X^2 = 1.76$		df = 2			

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका संख्या-4.13 से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों के मध्य काई वर्ग का मान 1.76 आया है जो 0.01 के सार्थक स्तर के मान से कम है। जिसका तात्पर्य है कि इन दोनों संस्थाओं के पुरुष विद्यार्थी के अभिमतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यहाँ शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था के पुरुष 'शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय' के प्रति समान दृष्टिकोण रखते हैं।

तालिका संख्या-4.14

'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	99	13	13	125
	fe	(106.5)	(8.5)	(10)	
स्ववित्तपोषित	fo	114	4	7	125
	fe	(106.5)	(8.5)	(10)	
योग		213	17	20	250
$X^2 = 7.62$			df = 2		

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका संख्या- 4.14 से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों के काई वर्ग का मान 7.62 आया है जो 0.01 के सार्थक स्तर के मान से कम है। इन दोनों संस्थाओं के

पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

इसका तात्पर्य है अनुदान प्राप्त संस्था के पुरुष एवं स्ववित्तपोषित संस्था के अधिकांशतः पुरुष 'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति समान दृष्टिकोण रखते हैं।

तालिका संख्या- 4.15

'शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	53	62	10	125
	fe	(62)	(53)	(10)	
स्ववित्तपोषित	fo	71	44	10	125
	fe	(62)	(53)	(10)	
योग		124	106	20	250
$X^2 = 5.68$		df = 2			

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका संख्या - 4.15 से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय सहज कार्यशैली' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों का काई वर्ग का मान 5.68 आया जो सार्थकता स्तर 0.01 के मान से कम है। इन दोनों संस्थानों के

पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यहाँ शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

इसका तात्पर्य है अनुदान प्राप्त संस्था एवं स्ववित्तपोषित संस्था के अधिकांशतः पुरुष 'शिक्षण व्यवसाय को सहज कार्यशैली' के रूप में स्वीकार करते हैं।

तालिका संख्या- 4.16

'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	59	47	19	125
	fe	(58.5)	(54)	(12.5)	
स्ववित्तपोषित	fo	58	61	6	125
	fe	(58.5)	(54)	(12.5)	
योग		117	108	25	250
$X^2 = 8.6$		df = 2			

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका संख्या- 4.16 से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों के काई वर्ग का मान 8.6 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के मान से कम है। इन

दोनों संस्थाओं के पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यहाँ शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

जिसका तात्पर्य है कि दोनों प्रकार की संस्थाओं के अधिकांशतः पुरुष विद्यार्थी 'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता' को समान रूप से स्वीकृत करते हैं।

तालिका संख्या- 4.17

'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	46	60	19	125
	fe	(57)	(50)	(18)	
स्ववित्तपोषित	fo	116	4	5	125
	fe	(57)	(50)	(18)	
योग		114	100	36	250
$X^2 = 8.36$			df = 2		

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

उपरोक्त तालिका संख्या- 4.17 से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों के काई वर्ग का मान 8.36 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के मान से कम है। इन दोनों संस्थाओं के पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अत: शून्य

परिकल्पना स्वीकृत होती है। जिसका तात्पर्य है अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था के पुरुष विद्यार्थी 'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' को समान रूप से स्वीकार करते हैं।

तालिका संख्या- 4.18

'शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	80	33	12	125
	fe	(71)	(42.5)	(11.5)	
स्ववित्तपोषित	Fo	62	52	11	125
	fe	(71)	(42.5)	(11.5)	
योग		142	85	23	250
$X^2 = 6.56$			df = 2		

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

प्रस्तुत तालिका संख्या- 4.18 से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों के काई वर्ग का मान 6.56 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के मान से कम है। इन दोनों संस्थाओं के पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यहाँ शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

जिसका तात्पर्य है अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था के पुरुष विद्यार्थी 'शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा' को समान रूप से स्वीकार करते हैं।

तालिका संख्या- 4.19

'शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के मध्य काई वर्ग परीक्षण की गणना

समूह	आवृति	हाँ	नहीं	अनिश्चित	योग
अनुदान प्राप्त	fo	75	28	२२	125
	fe	(80)	(27.5)	(17.5)	
स्ववित्तपोषित	fo	85	27	13	125
	fe	(80)	(27.5)	(17.5)	
योग		160	55	35	250
$X^2 = 2.96$		df = 2			

(सार्थकता स्तर 0.01 पर)

उपरोक्त तालिका संख्या- 4.19 से स्पष्ट होता है कि 'शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के मध्य अभिमतों में काई वर्ग का मान 2.96 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के मान से कम है। इन दोनों संस्थाओं के पुरुष विद्यार्थियों के अभिमतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यहाँ भी शून्य

परिकल्पना स्वीकृत होती है । जिसका तात्पर्य है अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था के अधिकांशतः पुरुष विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय को समान रूप से स्वीकार करते हैं।

अध्याय पंचम

‘अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष’

पंचम अध्याय

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

प्रदत्तों का संकलन, सम्पादन, विचारयुक्त वर्गीकरण तथा क्रमपूर्ण एवं सही तालिकायन की प्रक्रिया द्वारा व्यवस्थित करने के उपरान्त अध्ययन कार्य की उपलब्धियों के रूप में उन्हें प्रस्तुत करना तथा निष्कर्ष निकालना आवश्यक है। जिससे शोधकार्य पूर्णता की ओर अग्रसर हो सके तथा उन सीमाओं को भी वर्णित किया जाना आवश्यक है, जिन कारणों से शोध कार्य के अभीष्ट उद्देश्यों की उच्च स्तरीय उपलब्धि नहीं हो सकी। अतः प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम व निष्कर्ष निम्नवत् रूप से वर्णित किए गए हैं :-

5.1 अध्ययन से प्राप्त परिणाम

1. शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन करने पर पाया गया कि सकारात्मक अभिमतों का मध्यमान 63.26, नकारात्मक अभिमतों का मध्यमान 26.8 जबकि अनिश्चित अभिमतों का मध्यमान 9.94 प्राप्त हुआ।
2. शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के सकारात्मक अभिमतों का मध्यमान 65.83, नकारात्मक अभिमतों का मध्यमान 28.46 जबकि अनिश्चित अभिमतों का मध्यमान 5.71 प्राप्त हुआ।
3. शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के सकारात्मक अभिमतों का मध्यमान 60.46, नकारात्मक अभिमतों का मध्यमान 28.34 जबकि अनिश्चित अभिमतों का मध्यमान 11.2 प्राप्त हुआ।

4. शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के सकारात्मक अभिमतों का मध्यमान 61.37, नकारात्मक अभिमतों का मध्यमान 23.89 जबकि अनिश्चित अभिमतों का मध्यमान 14.74 प्राप्त हुआ।
5. शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के सकारात्मक अभिमतों का मध्यमान 65.37, नकारात्मक अभिमतों का मध्यमान 26.51 जबकि अनिश्चित अभिमतों का मध्यमान 8.12 प्राप्त हुआ।
6. **लघुशोध परिकल्पना 01-** 'शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः प्रथम परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' सत्य सिद्ध होती है और इसे स्वीकृत किया जाता है।
7. **लघुशोध परिकल्पना 02-** 'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। अतः द्वितीय परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' असत्य सिद्ध होती है एवं उक्त परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

8. **लघुशोध परिकल्पना 03-** 'शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अतः तृतीय परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है ।' सत्य सिद्ध होती है एवं उक्त परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।
9. **लघुशोध परिकल्पना 04-** 'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त सार्थक अन्तर पाया गया । अतः चतुर्थ परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है ।' असत्य सिद्ध होती है एवं उक्त परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है ।
10. **लघुशोध परिकल्पना 05-** 'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अतः पाँचवी परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है ।' सत्य सिद्ध होती है और इसे स्वीकृत किया जाता है ।

11.**लघुशोध परिकल्पना 06-** 'शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अतः छठवीं परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है ।' सत्य सिद्ध होती है और इसे स्वीकृत किया जाता है ।

12.**लघुशोध परिकल्पना 07-** 'शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त सार्थक अन्तर पाया गया । अतः सातवीं परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' असत्य सिद्ध होती है और इसे अस्वीकृत किया जाता है ।

13.**लघुशोध परिकल्पना 08- '**शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय' में अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्त पोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ । अतः आठवीं परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय के प्रति अभिमतों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।' सत्य सिद्ध होती है और इसे स्वीकृत किया जाता है।

14.**लघुशोध परिकल्पना 09-** 'शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि' में अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्त पोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में काई-वर्ग परीक्षण के उपरान्त कोई सार्थक अंतर नहीं प्राप्त हुआ । अतः नवमी परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्त पोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि के प्रति अभिमतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' सत्य सिद्ध होती है और इसे स्वीकृत किया जाता है।

15.**लघुशोध परिकल्पना 10-** 'शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ । अतः दसवीं परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' सत्य सिद्ध होती है और इसे स्वीकृत किया जाता है।

16.**लघुशोध परिकल्पना 11-** 'शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अतः ग्यारहवीं परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है ।' सत्य सिद्ध होती है एवं उक्त परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

17.**लघुशोध परिकल्पना 12-** 'शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अतः बारहवीं परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' सत्य सिद्ध होती है और इसे स्वीकार किया जाता है।

18.**लघुशोध परिकल्पना 13-** 'शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । अतः तेरहवीं परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' सत्य सिद्ध होती है और इसे स्वीकार किया जाता है।

19.**लघुशोध परिकल्पना 14-** 'शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा' के प्रति अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों के द्वारा दिए गए अभिमतों के मध्य काई वर्ग परीक्षण के उपरान्त कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः चौदहवीं परिकल्पना 'अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के प्रति अभिमतों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' सत्य सिद्ध होती है एवं इसे स्वीकार किया जाता है।

5.2 अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणामों के निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि-

1. शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिमतों की अधिकता है।
2. अधिकांशतः विद्यार्थियों ने शिक्षण व्यवसाय की कार्यशैली की सरलता को स्वीकार नहीं किया है।
3. बहुत कम विद्यार्थियों में शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के प्रति अनिश्चितता की स्थिति रहती है।
4. अधिकांशतः विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों से परिचित हैं तथा शिक्षण को व्यवसाय के रूप में अपनाने की इच्छा रखते हैं।
5. शिक्षण व्यवसाय एक सम्मानजनक व्यवसाय को सर्वाधिक सकारात्मक अभिमतों की प्राप्ति दर्शाती है कि विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय को अन्य व्यवसायों की अपेक्षा अधिक सम्मानजनक स्वीकार करते हैं।
6. स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा अनुदान प्राप्त संस्था में अध्ययनरत् महिलाएँ शिक्षण व्यवसाय को अधिक सम्मानजनक मानती हैं।
7. अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों में स्ववित्तपोषित संस्था की महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा शिक्षण व्यवसाय में सकारात्मक मदों की अधिकता के कारण अधिक कार्य सन्तुष्टि को स्वीकार किया गया।
8. शिक्षण व्यवसाय में अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों ने शिक्षण व्यवसाय में सहज कार्यशैली को समान रूप से नकारात्मक अभिमत प्रदान किए।

9. अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों ने स्ववित्तपोषित संस्था की महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक अवकाशों की उपलब्धता को स्वीकार किया है।

10. स्ववित्तपोषित एवं अनुदान प्राप्त दोनों ही प्रकार की संस्थाओं की बी0एड0 में अध्ययनरत् अधिकांशतः महिला विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता को समान रूप से स्वीकार करती हैं।

11. अनुदान प्राप्त संस्था की महिला विद्यार्थी स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा के प्रति अधिक स्वीकृत पाई गई।

12. अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय को स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक रूप से अधिक सुरक्षित मानती हैं।

13. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् अधिकांशतः पुरुष विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय को एक सम्मानजनक व्यवसाय के रूप में स्वीकार करते हैं।

14. स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय में कार्य सन्तुष्टि को अनुदान प्राप्त संस्था के पुरुष विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक स्वीकार करते हैं।

15. स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थी अनुदान प्राप्त संस्था के पुरुष विद्यार्थियों की अपेक्षा शिक्षण व्यवसाय की कार्यशैली को सहज रूप से स्वीकार करते हैं।

16. अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् अधिकांशतः पुरुष विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय में अधिक अवकाशों की उपलब्धता को समान रूप से स्वीकार करते हैं।

17. स्ववित्तपोषित संस्था में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थी अनुदान प्राप्त संस्था में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थियों की अपेक्षा शिक्षण व्यवसाय में प्रोन्नति के अवसरों की सुलभता के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

18. अनुदान प्राप्त संस्था में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थी स्ववित्तपोषित संस्था के पुरुष विद्यार्थियों की अपेक्षा शिक्षण व्यवसाय में उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

19. अनुदान प्राप्त संस्था एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् पुरुष विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के प्रति समान दृष्टिकोण रखते हैं।

अतः अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों एवं स्ववित्तपोषित संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों के शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति अभिमतों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण स्ववित्तपोषित संस्था की महिला विद्यार्थियों से अधिक सकारात्मक है।

अनुदान प्राप्त संस्था में बी0एड0 में अध्ययनरत् महिला विद्यार्थियों ने शिक्षण व्यवसाय को अधिक सम्मानजनक, कार्य सन्तुष्टि प्रदान करने वाला, कार्यशैली में सहजता, अधिक अवकाशों की उपलब्धता, उच्च मानदेय एवं भविष्य सुरक्षा तथा मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षा प्रदान करने वाला व्यवसाय माना है।

5.3 अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता एवं सुझाव

शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिमतों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों के प्रति सकारात्मक अभिमत अधिक रखते हैं। अतः इसकी शैक्षिक उपयोगिता एवं सुझाव निम्न प्रकार से हैं -

विद्यार्थियों के लिए :

1. विद्यार्थी शिक्षण के अधिकारों एवं कर्तव्यों की उचित जानकारी प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व में एक आदर्श शिक्षक के गुणों को समाहित कर सकते हैं एवं एक आदर्श शिक्षक बन सकते हैं।
2. विद्यार्थी शिक्षण व्यवसाय से सम्बन्धित विविध आयामों की अधिकतम जानकारी प्राप्त करने का प्रयास कर सकते हैं जिससे वह शिक्षण व्यवसाय को अधिक अच्छे से समझ सकें एवं उसमें अपनी पूर्ण सहभागिता दे सकें।

शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों के शासकों के लिए सुझाव :

शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशासकों का कार्य केवल संस्थान के प्रशासन को ही चलाना नहीं होता वरन् विद्यार्थियों की योग्यताओं का विकास तथा उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम बनाना भी प्रशासकों का दायित्व है। जैसे-

1. विद्यार्थियों को शिक्षण व्यवसाय की अधिकतम जानकारी प्रदान करने के लिए निर्देशन एवं परामर्श की उचित व्यवस्था करनी चाहिए।
2. विद्यार्थियों को शिक्षण व्यवसाय के विविध आयामों का परिचय प्रदान करना चाहिए।
3. विद्यार्थियों को शिक्षण से सम्बन्धित सैद्धान्तिक, प्रयोगात्मक एवं व्यावहारिक तीनों प्रकार का ज्ञान प्रदान करना चाहिए।

4. समय-समय पर शिक्षण व्यवसाय में होने वाले नवीन प्रयोगों की जानकारी विद्यार्थियों को देनी चाहिए।

5.4 भावी अध्ययन हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल बाँदा जनपद के अतर्रा एवं बाँदा तहसील के शिक्षा संकाय के बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर किया गया है। इसमें अन्य शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों को सम्मिलित करके और अधिक महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन किया गया है। इसमें शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षकों के अभिमतों का अध्ययन करके और अधिक महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।
3. शिक्षण व्यवसाय तथा अन्य व्यवसायों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है
4. प्रस्तुत अध्ययन में केवल अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थाओं में बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का ही तुलनात्मक रूप से अध्ययन किया गया है। निजी विश्वविद्यालयों, डीम्ड विश्वविद्यालयों तथा स्वायत्तशासी संस्थाओं द्वारा संचालित बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है
5. प्रस्तुत अध्ययन में केवल अनुदान प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थाओं में बी0एड0 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिमतों का अध्ययन किया गया है। हम इसमें बी0एड0 उत्तीर्ण कर शिक्षक पद पर नियुक्त हुए शिक्षकों के अभिमतों का तुलनात्मक अध्ययन भी कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्निहोत्री, रविन्द्र (1994). "आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएँ एवं समाधान", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- अनिल, आर० एवं जोसेफ शोली (2003)," ए स्टडी ऑफ इन्टरेस्ट ऑफ टीचर ट्रेनीज अण्डर गोइंग बी०एड० कोर्स इन कन्नूर यूनिवर्सिटी", काउन्सिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च चेन्नई।
- कपिल, एच० के० (1988). 'सांख्यिकी के मूल तत्व' (सामाजिक विज्ञानों में), विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- कौल, लोकेश (2006), "शैक्षिक अनुसन्धान की कार्य प्रणाली", विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा० लि०, नई दिल्ली।
- गुप्त, डॉ० एस० पी० (2019), "आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन", इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- शर्मा, आर० ए० (2016), "शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया", आर० लाल० बुक डिपो, मेरठ।
- दास, राम (2014), "उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं विषय सजगता के सन्दर्भ में कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट अनुप्रयोग सम्बन्धी कौशलों का अध्ययन", पी-एच० डी० थीसिस, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
- गुड, कार्टर वी० (1956), "डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन", मैकग्रेहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।

- विश्वास, ए0 एवं अग्रवाल जे0 सी0 (1971), "एनसाइक्लोपीडिया डिक्शनरी एण्ड डायरेक्टरी ऑफ एजूकेशनल" (वॉल्यूम फस्ट), द एकेडमिक पब्लिशर्स इण्डिया, नई दिल्ली।
- वेब्सटर्स, मरियम (1768), "वेब्स्टर्स थर्ड न्यू इण्टरनेशनल डिक्शनरी" (वॉल्यूम सेकण्ड), एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका इन्स, अमेरिका।
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू0 (1963), "रिसर्च इन एजूकेशन", प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
- नीलसन, सी0 एल0 (1971), "ए स्टडी ऑफ द इफ़ेक्ट ऑफ टीचिंग एटीट्यूडस अपॉन द वोकेशनल सक्सेसनेस ऑफ स्टूडेन्ट्स", इण्टरनेशनल डेजरटेशन एब्स्ट्रेक्ट, (वॉल्यूम 32), ह्यूमेनिटीज एण्ड सोशल साइन्सेज, मिशीगन।
- विठ, जी0 एस0 (1972), "ए स्टडी ऑफ द लेविल ऑफ एजूकेशनल एस्पीरेशन्स स्टेटमेन्ट", पी-एच0डी0 थीसिस, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।
- सोवलमैन, ए0 (1972), "ए सोशियोलॉजिकल स्टडी ऑफ टीचिंग एटीट्यूडस ऑफ सेकेण्डरी टीचर्स इण्टरनेशनल डेजरटेशन एब्स्ट्रेक्ट्स, (वॉल्यूम 33), ह्यूमेनिटीज एण्ड सोशल साइन्सेज, मिशीगन।
- शर्मा, एस0 एन0 (1973), "इवेल्यूएशन ऑफ प्रेक्टिस टीचिंग प्रोग्राम ऑफ पी.जी. टीचर एजूकेशन", पी-एच0डी0 थीसिस, ए0 एम0 यू0, अलीगढ़।
- मैडल एवं डोलान्ड, एम0 (1977), "टीचर इफैक्टिवनैस", एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशनल रिसर्च।

- दास, के0 (1985), "इंडिया में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का औपचारिक गुणवत्ता के सन्दर्भ में विकास का अनुसंधान", फोर्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च 1983-88, न्यू देहली : एन.सी.ई.आर.टी. वॉल्यूम -2, (पृ. सं. - 1277)
- भाटिया, आर0 (1987), मुंबई विश्वविद्यालय व संबद्ध शिक्षा महाविद्यालय में "बी0एड0 पाठ्यक्रम का मूल्यांकन' फोर्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च 1983-88, न्यू देहली : एन.सी.ई.आर.टी. वॉल्यूम -2, (पृ. सं. - 1287)
- बवेजा, मुखान्त (2003), "दक्षता आधारित शिक्षक प्रशिक्षण रणनीति की प्रभावशीलता का अध्ययन", इन्डियन एजूकेशनल एब्सट्रैक्ट, न्यू देहली : एन.सी.ई.आर.टी. वॉल्यूम - 5, (पृ. सं.- 21)
- देवी, के0 (2004), "बी0एड0 प्रशिक्षुओं का शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन", इन्डियन एजूकेशनल रिव्यू, न्यू देहली : एन.सी.ई.आर.टी. वॉल्यूम - 2, 2004, (पृ. सं.- 48)
- कौर, जे0 (2004), "शिक्षक शिक्षण कार्यक्रम पर शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिप्रेरणा एवं अभिवृत्ति के साथ विभिन्न व्यक्तित्व कारक वाले प्रशिक्षणार्थियों के प्रभाव का अध्ययन", इन्डियन एजूकेशनल रिव्यू, न्यू देहली : एन.सी.ई.आर.टी. वॉल्यूम - 2, 2004, (पृ. सं.- 23)
- गिल, टी0 के0 एवं सैनी, एस0 के0 (2005), "अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा शिक्षण व्यवसाय के प्रति छात्राध्यापक की अभिवृत्ति का अध्ययन", मनोविज्ञा इन्डियन जर्नल ऑफ टीचर एजूकेशन, न्यू देहली : एन.सी.टी.ई. वॉल्यूम - 3(2), (पृ.सं.- 80)

- शर्मा, एस0 (2006), "बी0एड0 प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का सामान्य शिक्षण योग्यता, व्यावसायिक शिक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन", अन्वेषिका इन्डियन जर्नल ऑफ टीचर एजूकेशन, न्यू देहली : एन.सी.टी.ई. वॉल - 3(2), (पृ.सं.- 86)
- मिश्रा, लोकनाथ (2007), "दो वर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के छात्राध्यापकों का शिक्षण व अध्यापक शिक्षा के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन", इन्डियन एजूकेशनल एब्स्ट्रैक्ट्स, न्यू देहली : एन.सी.ई.आर.टी. वॉल - 2 (पृ. सं.- 57)
- रामाकृष्णा, ए0 (2008), "बी0एड0 महाविद्यालय के विद्यार्थियों में शिक्षण अभिरुचि का अध्ययन", इन्डियन एजूकेशनल रिव्यू, न्यू देहली : एन.सी.ई.आर.टी. वॉल - 2, (पृ. सं.- 28)
- सुनीथा, जी0 (2008), "छात्राध्यापक का माध्यमिक स्तर के शिक्षण प्रशिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन", इन्डियन एजूकेशनल रिव्यू, न्यू देहली : एन.सी.ई.आर.टी. वॉल - 2, (पृ. सं.- 37)
- लिखिया, के0 एस0 (2009), "शिक्षक प्रशिक्षक कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षक सामर्थ्यता में परिवर्तन का अध्ययन", जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकॉलोजी, 2009, वॉल - 63, नं- 1, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लव विद्या नगर, (पृ. सं.- 25)
- महालक्ष्मी, डी0 (2009), "ए स्टडी ऑफ द अवेयरनेस ऑफ फ्यूचर टीचर", टीचर सपोर्ट, न्यू देहली : एन.सी.टी.ई. 2009, वॉल – 2(1), (पृ. सं.- 28)

- भार्गव, के0 (2011), "छात्र अध्यापक की शिक्षण योग्यताओं के प्रति प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन", टीचर सपोर्ट, न्यू देहली : एन.सी.टी.ई. 2000, वॉल – 2(1), (पृ. सं.- 43)

- राजेश्वरी, के0 (2015), "क्वेस्ट फॉर क्वालिटी इम्प्रूवमेंट इन टीचर एजूकेशन विद स्पेशल रेफरेंस टू केरला बी0एड0 प्रोग्राम", न्यू देहली, सी.सी.टी.ई. जर्नलऑफ रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन इन एजूकेशन, वॉल – 10(2), (पृ. सं.- 114-120)

- पाटीदार, जितेन्द्र कुमार (2015), "भावी शिक्षक एवं रिफ्लेक्शन एक दृष्टिकोण", अन्वेषिका इन्डियन जर्नल ऑफ टीचर एजूकेशन, न्यू देहली : एन.सी.टी.ई. वॉल – 3(2), (पृ.सं.- 47-57)

- मेहता, दीपा (2016), "बैकड्राप आफ इण्ट्रोड्यूसिंग टू इयर बी0एड0 करिकुलम : इट्स विजन एण्ड डिजायर्ड चेंज", न्यू देहली : यूनिवर्सिटी न्यूज, वॉल – 54 (38), 2016, (पृ.सं.- 6-10)

- सक्सैना, एन0 आर0 एवं मिश्रा, बी0 के0 एवं मोहन्ती आर0 के0 (1999), "अध्यापक शिक्षा", आर0 एल0 बुक डिपो, मेरठ।

- शर्मा, आर0 ए0 (2016), "शिक्षा तथा मनोविज्ञान में परा तथा अपरा सांख्यिकी", आर0 एल0 बुक डिपो, मेरठ।

ISBN 978-93-341-2444-6

शिक्षा हमें नही बताती कि क्या सोचना है,

बल्कि यह सिखाती है कि कैसे सोचना है।



शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में
तथ्यों को जबरन ठूंसे,
बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है
जो उसे आने वाली कल की
चुनौतियों के लिए तैयार करे.

-डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन



